अध्याय : १

भीष्म साहनी का व्यक्तित्व और कृतित्व

==========

अध्याय : 1

भीष्म साहनी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

==========

भीष्म साहनी : व्यक्तित्व

किसी प्रसिध्द लेखक का व्यक्तित्व जानना अत्यंत मुश्किल होता है। उसके व्यक्तित्व को स्पष्ट करना अत्यंत मुश्किल है। परंतु उस लेखक के जीवन के कुछ ऐसे बिंदु होते है, जिनके कारण उस लेखक का व्यक्तित्व हमारे सामने स्पष्ट होता है। निम्नांकित कुछ पहलुओं के द्वारा हम प्रसिध्द लेखक भीष्म साहनी का व्यक्तित्व जान सकते हैं।

जन्मतिथि तथा जन्मस्थान :–

हिन्दी के सुप्रसिध्द साहित्यिक भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त 1915 में रावलपिण्डी के एक मध्यमवर्गीय व्यापारी परिवार में हुआ। पिताजी का नाम 'हरवंशलाल' था। बडे भाई का नाम बलराज था जो एक प्रसिध्द हिन्दी फिल्म अभिनेता थे। आपकी पाँच बहने हैं। आपके पिताजी ने गरीबी से अपना सारा जीवन उभारा था।

वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिण्डी में भीष्म साहनी का जन्म हुआ और बचपन भी वहीं रावलपिण्डी में बिता है। जीवन की सभी प्रवृत्तियों की झलक रावलपिण्डी में देखने को मिलती है। जीवन की इन्हीं प्रवृत्तियों ने भीष्म साहनी के व्यक्तित्व को बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान दिया है। रावलपिण्डी का एक भाग कैण्टौनमैंट कहलाता था, जो अत्यंत साफ रहता था। खुली सडकें, सडकों के किनारे पेड, बगीचे, सिनेमाघर आदि से यह भाग अत्यंत सुंदर बना था। इस भाग में ज्यादातर अंग्रेज रहते थे इसीकारण पाश्चात्य संस्कृति की झलक वहाँ मिलती थी। रावलपिण्डी का दूसरा भाग शहर कहलाता था। शहर में अत्यंत गन्दगी थी। अंधेरी तंग गलियाँ, लोगों की भीड, कीचड़ से यह भाग भरा रहता था। इस भाग

में कँाग्रेस के जुलूस निकलते, साथ ही गुरूद्वारे और आर्य समाज के मुहर्रम, तजिये निकलते थे। अनेक धर्म के लोग वहाँ रहते थे इसीकारण वहाँ पर सांम्प्रदायिक तनाव सदा बना रहता था। परंतु लोगआम तौर परएक दूसरे के साथ स्नेहभाव से रहते थे और एक दूसरे के धर्म मर्यादाओं की कद्र करते थे। शहर के इस वातावरण का भीष्म साहनी के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पडा है।

बचपन :-

भीष्म साहनी का बचपन अधिक काल तक बीमारी में ही बीता। बीमार होने के कारण बचपन में अकेले घण्टों तक बिस्तर पर पडे रहते। दिन भर घर के सभी सदस्य घरके बाहर ही होते थे। माँ को सत्संग का शौक होने के कारण वह हमेशा किसी सत्संग में गयी होती। बहने स्कूल जाती थीं। दिन ढलने पर भीष्म साहनी सभी की राह देखते। बडे भाई बलराज के आने का आपको बडा इंतजार रहता था। दिन में कभी पिताजी आते थर्मामीटर निकालकर उसे झटकते, माथे पर हाथ फेरते, जेब से कुछ पैसे निकालकर आपके सिरहाने रखकर चले जाते। शाम को भीष्मजी का उत्साह हमेशा बना रहता कि कौन सबसे पहले घर लौट आएगा। बचपन में भीष्म को बडे भाई बलराज की हर बात अनूठी लगती थी। भीष्म की नजर में बलराज एक विलक्षण व्यक्तित्व था जो पीली धोती पहनकर गुरूकूल जाता, हॉकी खेलता, तीर कमान चलाता, गणित के सवाल करता। बलराज के प्रति भीष्म के मन में अनेक भावनाएँ रहती।

बचपन में आपकी माँ आपको अनेक कहाँनियाँ सुनाती थी, सन्त मोतीराम के वैराग्य के गीत सुनाती। उस वक्त पिताजी माँ से कहते कि बच्चो को वैराग्य के गीतों के बजाय हँसी-खेल, वीरता के मधुर, आस्वादपूर्ण, खुशी के गीत सुनाया करो। कहानी सुनते सुनते आप अपनी माँ की गोद में अपार सुखके साथ सो जाते थे।

बीमारी दूर होनेपर भीष्म साहनी में आम बच्चों की तरह शरारत आ गयी। बचपन में आप अत्यंत शरारती थे। गली के किसी भी तॉंगे में आप चोरी छिपे बैठते और शहर की सैर करते। तॉंगेवालेद्वारा चाबुक चलाने या डॉंटनेपर भी चोरी से सैर करने की आपकी आदम छुटती नहीं थी। गली के पास होनेवाले 'कमेटी मैदान' में आप कुत्तों, मुर्गियों की लडाईयॉं देखने जाते थे। बचपन में आपको शहर में अकेले घूमने की आदत थी इसीकारण आपके पिताजीने आपके गले में एक लेबल बॉंधा था जिसपर आपके पिता का नाम और पता लिखा था। इसी लेबल के कारण आप शहर में भटक जाते तो कोई भी व्यक्ति आपको घर छोड देता था।

आपका जन्म एक खाते–पीते छोटे से व्यापारी परिवार में हुआ था। पिताजी गरीबी से उभरे थे इसीकारण आपके घर में अत्यंत सादगी थी। परिवार में स्नेहपूर्ण संबंध थे। पिताजी आर्यसमाजी होकर भी समाजसेवा के कार्य में दिलचस्पी रखते थे। आर्यसमाज द्वारा चलाये जानेवाले अस्पताल, आश्रम, पाठशाला, कालेज आदि में पिताजी काम करते थे। पिताजी के कारण ही पूरा साहनी परिवार समाजोन्मुख हुआ। आपके पिताजी का दृष्टिकोण उदारवादी अधिक रहा है। पिताजी के इसी दृष्टिकोण के कारण आपको पता भी नहीं चला कि आप कब बडे हो गये, घर में अंग्रेजी में वार्तालाप होने लगा, परिवार कब भोजन के लिए टेबल पर बैठने लगा, कब आपके मुसलमान दोस्त घर आने लगे, कब भगतसिंग और साथियों की तस्वीरें घर में लगी इन बातों का आपको पता ही नहीं चला। इसप्रकार पिताजी के उदारवादी दृष्टिकोण का भी आपके व्यक्तित्व पर अत्यंत गहरा प्रभाव रहा है।

भीष्म साहनी के बचपन में ही भारतीय आजादी के आंदोलन में हिस्सा लिया जिसके कारण आपको आपकी विलायती रेशमी टोपी और कुर्ता पहनना छोडना पडा। आपके बचपन में ही पुलिस द्वारा लाठी चलाने से लाला लजपतराय की मौत हुई और भगतसिंह को फॉंसी की सजा हुई। अंग्रेजों के विरूध्द चले भारतीयों के आजादी आंदोलन का गहरा असर बचपन में ही भीष्म साहनी के व्यक्तित्व पर हुआ। आपने बचपन में हमेशा आत्मनिर्वासन के खिलाफ कडा संघर्ष किया है।

भीष्म साहनी हिन्दुस्थानी है पर उनका बचपन वर्तमान पाकिस्तान के रावलपिण्डी शहर में बिता इसलिए आप रावलपिण्डी के ही बेटे कहलायेंगे। अतः आपको आपके बचपन की मिट्टी अर्थात रावलपिण्डी से कोई भी अलग नहीं कर सकता।

शिक्षा :-

भीष्म साहनी के पिताजी आर्यसमाजी होने के कारण आपको बचपन में आर्यसमाज के स्कूल में दाखिल किया गया। परंपरानुसार आप पिली धोती पहनकर पाठशाला में जाते थे। परंतु बडे भाई बलराज की अपेक्षा आप पढाई में थोडा कम ध्यान देते थे। नार्थ पोल और साऊथ पोल कहकर ही आपके अध्यापक दोनों की तुलना करते थे। आठवी कक्षा में आप जिले में चौथे नंबर से उत्तीर्ण हुए। इसीकारण आपको पुरस्कार भी मिला। स्कूल के दिनों में आपको इतिहास विषय में अत्यंत गहरी दिलचस्पी थी और आज भी साहित्य और समाजशास्त्र में दिलचस्पी है।

लाहोर के गवर्नमेंट कॉलेज से 1937 में आपने अंग्रेजी विषय में एम्.ए. पास किया। आप अंग्रेजी भाषा और साहित्य के प्राध्यापक थे और अच्छा साहित्य निर्माण करते थे।

रूचियाँ :-

भीष्म साहनी अपने कॉलेज के दिनों में हॉकी खेलने के बडे शौकीन थे। कॉलेज में बी.ए. होने के बाद हॉकी खेलने को नहीं मिलेगा। इसकारण सिर्फ हॉकी खेलने के लिए आपने एम्.ए. में प्रवेश लिया था। हॉकी खेलने के साथ साथ यात्रा करना, तैरना आदि के भी आप शौकीन रहे और आज भी है। इतिहास एवं साहित्य में भी आपको गहरी रूचि रही हैं।

बारिश में घूमना, कुत्ते-मुर्गियों की लडाईयाँ देखना, चोरी छुपे ताँगे में बैठकर शहर की सैर करना आदि बचपन की आपकी विशेष रूचियाँ रही हैं। अपने लेखन के माध्यम से समाज का वास्तववादी चित्रण करना आपकी सबसे बडी रूचि रही हैं। मूर्तियाँ बनाने में आप

रूचि रखते थे। बचपन में आप मूर्तिकला सीखने के लिए श्रीनगर में एक विदेशी महिला के पास जाते थे, परंतु वहाँ पर फीस ज्यादा होने के कारण आप ज्यादा काल तक सीख नहीं पाए।

बचपन और जवानी में नाटक खेलना आपको अच्छा लगता था। बडे भाई बलराज के साथ आप अभिनय किया करते थे। कॉलेज के दिनों में आपने अनेक नाटकों में काम किया है। चित्र और कला प्रदर्शन देखना आपका विशेष शौक रहा है। आपने अनेक विदेश यात्राएँ की है। लम्बे समय के लिए आप रूस में रह चुके है।

भीष्मजी की नौकरियाँ :-

एक आम आदमी की तरह भीष्म साहनी की नौकरी में ठहराव नहीं रहा। अपनी इच्छानुसार आपने अनेक नौकरियाँ बदली है। प्राध्यापक, व्यापारी, अनुवादक, संपादक आदि अनेक नौकरियाँ आपने की हैं।

पिताजी चाहते थे कि आप भी उनके साथ व्यापार करे, परंतु आपका मन व्यापार में नहीं लगता था। इसलिए व्यापार देखते देखते रावलपिण्डी के एक कॉलेज में आप पढाने लगे। देशविभाजन होने के बाद पंजाब के एक कॅालेज में आप प्राध्यापक बने। वहाँ नौकरी करते करते अध्यापकों की युनियन बनवाई और उसके जनरल सेक्रेटरी बन गए। युनियन बनवाने के कारण कॅालेज में आपको नौकरी मिली, परंतु कुछ ही महिनों में वहाँ से भी आपकी छुट्टी हो गई। बाद में पंजाब में नौकरी मिलना असम्भव हुआ। दिल्ली के एक कॅालेज में आप अंग्रेजी के अध्यापक बने। अमृतसर का खालसा कॅालेज तथा अम्बाला के एक कॅालेज में भी अपने अध्यापक का काम किया।

भीष्म साहनी का जन्म एक व्यापारी परिवार में हुआ था। एम्.ए. उत्तीर्ण होने के बाद आप पिताजी के साथ व्यापार करने लगे। आपको व्यापार करना अच्छा नहीं लगता था, परंतु यह बात पिताजी से कहने का साहस भी आपमें नहीं था। इसी समय आपके बडे भाई बलराज घर छोडकर चले गए। देश विभाजन के बाद आप जब दिल्ली आये तो व्यापार का यह

सिलसिला समाप्त हुआ। दिल्ली में आपने अपने आप को अधिक आजाद महसूस किया।

भीष्म साहनी रूसी भाषा जानते हैं। 1957 में कुछ समय के लिए आप मास्को चले गए। वहाँ पर 'विदेशी भाषा प्रकाशन गृह' में अनुवादक के रुप में सात साल तक काम किया। अनेक रूसी भाषा की पुस्तकों का अनुवाद किया। उनमें टालस्टाय का "पुनरूत्थान", लम्बी कहानियाँ, आस्त्रावस्की का "जयजीवन" और आइमातोव का "पहला अध्यापक" आदि प्रमुख अनुवाद रहे।

कुछ सालों तक आप "नई कहानियाँ" नामक पत्रिका के संपादक रहे हैं। आपके मतानुसार पाठक, समाज और लेखक में साहित्यिक पत्रिका की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

भीष्मजी के बडे भाई बलराज फिल्मी अभिनेता थे। इसकारण भीष्म को भी बचपन से ही अभिनय के प्रति लगाव था। भाई बलराज के साथ आप घर में पृथ्वीराज चौहान, श्रवणकुमार, महाराणा प्रताप आदि के नाटक खेलते थे। महाराणा प्रताप नाटक खेलते समय आपके भाई बलराज राणाप्रताप बनते और आप उनके घोडे चेतक बनते। स्कूल और कॉलेज के दिनों में भी आप नाटक में काम किया करते थे। आप जब पंजाब के कॉलेज में प्राध्यापक थे तब आप जन नाट्यसंघ में भी कार्यरत थे। बडे भाई बलराज के कहनेपर आपने मुंबई में इप्टा के नाटको में अभिनय किया।

<u>शादी और गृहस्थी</u> :–

भीष्म साहनी की शादी अठ्ठाईस साल की उम्र में शीला नामक लडकी से हुई। आपकी दो संताने हैं – वरुण और कल्पना। आम आदमी की तरह सामान्य बातों को लेकर भीष्म और शीला में झगडा भी होता था। परंतु शीलाजी अत्यंत समझदार हैं। अपने पति भीष्म के बारे में शीलाजी को किस प्रकार की शिकायत नहीं है। एक रेडिओ स्टेशन में काम करके शीलाजी ने घर की आर्थिक समस्या को दूर करने में भीष्मजी की सहायता की है। भीष्मजी की प्रत्येक रचना की पहली पाठिका शीलाजी है। वैवाहिक जीवन में आप अत्यंत सुखी एवं भाग्यवान व्यक्ति रहे है। अपने पति का स्वभाव और लेखन की मर्यादा से शीलाजी अच्छी तरह

अवगत है। आज तक के आयुष्य में भीष्म और शीलाजी ने एक दूसरे को अच्छी तरह समझ लिया है।

राजनीतिक कार्यकर्ता :-

भीष्म साहनी ने अपने बचपन में ही अंग्रेजों के विरूध्द चले आजादी आंदोलन में हिस्सा लिया था। आजादी आंदोलन में भगतसिंह को फाँसी की सजा होने पर आपने दिन भर कुछ खाया पिया नहीं और अंग्रेजों का विरोध किया। घर का व्यापार, कॉलेज की नौकरी के साथ साथ आप कॉंग्रेस का काम करते थे। कागज का युनियन जैक बनाकर उसे अपने जूते पर लगाकर आपने अंग्रेजों के प्रति अपना विरोध प्रकट किया था। देश का जब बँटवारा हुआ उस समय आप कॉंग्रेस की रीलिफ कमिटी में काम करते थे और आँकडे इकठ्ठा करते कि कितने मरे, कितने घायल हुए, कितने घर जले आदि। आपका उपन्यास 'तमस' इसी अनुभव पर आधारित है।

देश विभाजन के बाद आप भारत आये। आपके घर में मार्क्सवादी को लेकर चर्चा होने लगी। आपको लम्बे समय तक रूस में रहने का अवसर मिला। सोविएत संघ की अनेक बातों ने आपको प्रभावित किया। आपने जीवन को मार्क्सवादी दृष्टि से देखने का प्रयास किया और वही दृष्टिकोण अपने साहित्य में स्पष्ट करने की कोशिश की है। परंतु आप मार्क्सवादी नहीं रहे, तो अपने बडे भाई बलराज के समान आप साम्यवादी ही रहे है। एक कट्टर साम्यवादी होने के नाते धर्म के गूढतावाद में आप बिल्कुल विश्वास नहीं करते।

स्वभाव :-

बचपन में आप अधिक शरारती थे, खेल कूद करते, चोरी से शहर की सैर करते। गली-मुहल्ले में मे गंदी-गंदी गालियाँ सीखकर आते। इसका परिणाम यह हुआ कि आपके भाई बलराज को लोग शरीफ कहने लगे और आपको आवारा। बडे होकर आपने अपने स्वभाव में बदलाव किया तो आप दब्बू स्वभाव के बन गए। आप अत्यंत शांत स्वभाव के, कम

बोलनेवाले व्यक्ति हैं। शाम के वक्त किसी का घर आना आपको अच्छा नहीं लगता। आप अत्यंत विनम्र स्वभाव के हैं। इसीकारण अनेक लोग आपके स्वभाव का नाजायज़ फायदा उठाते है।

आपने अपनी जिन्दगी में समझदारी दिखाई है। पिताजी की चाहत के कारण ही आप अनेक सालों तक स्वयं की इच्छा के खिलाफ पिताजी के साथ व्यापार करते रहे। माँ–बाप को छोडकर जाना आपको अच्छा नहीं लगता था, इसकारण अनेक बार मौका मिलनेपर भी आपने घर नहीं छोडा। आप विद्रोही रहे हैं, परंतु घर में कभी विद्रोह नहीं दिखाया। बडे भाई बलराज विद्रोही थे और घर में भी विद्रोह करते इसकारण आपका रास्ता साफ हो जाता और आपको विद्रोह नहीं करना पडता। आपके पिताजी आपकी इच्छा के विरूध्द अपने दोस्त की बेटी के साथ आपकी शादी करना चाहते थे। परंतु आपने खुलकर इस बात का विरोध नहीं किया और पिताजी के मित्र को ही आग्रह किया कि वे पिताजी को समझाए। इसप्रकार आपके पिताजी मान गए।

जिन्दगी में आप अत्यंत सादगी से रहे। एक अंग्रेजी प्राध्यापक जैसे आपके मिजाज कभी नहीं थे। आपका स्वभाव अत्यंत मिलजुलकर रहनेवाला है। आपके अनेक दोस्त इस बात का सबूत हैं।

उपर्युक्त पहलुओं के आधारपर भीष्म साहनी का व्यक्तित्व बहुत मात्रा में हमारे सामने स्पष्ट हो जाता हैं।

<u>पुरस्कार</u> :–

भीष्म साहनी को अनेक साहित्यिक पुरस्कार मिले हैं। इन प्रतिष्ठित पुरस्कारों ने आपके व्यक्तित्व में चार चाँद लगाये है। आप निम्नांकित पुरस्कारों से विभुषित हुए हैं –

(1) आपके विचारों को व्यक्त करनेवाला उपन्यास 'तमस' को इ.स.1975 मे साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

(2) इ.स.1975 में ही पंजाब सरकार के भाषा विभाग ने 'शिरोमणि लेखक' पुरस्कार से

आपको पुरस्कृत किया।

(3) "एफ्रो–एशियाई लेखक संघ" की ओर से 1980 में आपको 'लोटस' पुरस्कार प्राप्त हुआ।

(3) दिल्ली प्रदेश साहित्य कला परिषद द्वारा भी आपको सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

(5) "कबीरा खडा बाजार में", "झरोखे", "हानुश" आदि साहित्य कृतियोंपर भी आपको पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

इसप्रकार भीष्म साहनी का व्यक्तित्व एक संघर्षशील कलाकार का रहा है।

भीष्म साहनी का कृतित्व :–

भीष्म साहनीजी ने अनेक प्रकार के साहित्य का निर्माण किया है। उसमें नाटक, कहानी संग्रह, उपन्यास, जीवनी,बाल साहित्य तथा अनुवाद कार्य महत्वपूर्ण रहा है। भीष्म साहनी के साहित्य का विश्लेषण निम्न प्रकार से किया जा सकता है –

(1) कहानी संग्रह : वाड़चू, निशाचर, पाली, शोभायात्रा, पटरियाँ, भटकती राख, मेरी प्रिय कहानियाँ।

(2) उपन्यास : झरोखे, बसन्ती, कडियाँ, तमस, मय्यादास की माडी, कुंतो।

(3) नाटक : हानुश, माधवी, मुआवजे, कबीरा खडा बाजार में।

(4) जीवन : मेरे भाई बलराज।

(5) बालसाहित्य : गुलेल का खेल।

(6) अनुवाद कार्य : टॉलस्टॉय का "पुनरूत्थान" तथा लम्बी कहानियाँ", निकोलाई आस्त्रावस्की का "जयजीवन", आइमातोव का "पहला अध्यापक" आदि।

भीष्म साहनी : कृतित्व

(1) कहानी संग्रह :-

भीष्म साहनी प्रमुखत: कहानीकार के रुप में प्रसिध्द रहे है। आपके जो कहानी संग्रह है उनका परिचय निम्न प्रकार से है -

(1) वाड्चू ।

(2) निशाचर ।

(3) पाली ।

(4) शोभायात्रा ।

(5) पटरियाँ ।

(6) भटकती राख ।

(7) मेरी प्रिय कहानियाँ ।

वाडचू :-

1978 में प्रकाशित "वाड्चू" कहानी संग्रह साहनी जी का पाँचवा कहानी संग्रह है। इस संग्रह में पहली कहानी है "ओ हरामजादे" जिसमें एक प्रवासी भारतीय लाल नामक इंजिनिअर के देशप्रेम का वर्णन किया है। पिताजी की बातों से रूठकर यह इंजिनिअर युरोप में जाता है और वही पर एक युरोपियन लडकी से शादी करता है। युरोप में रहकर भी वह भारतीय संस्कृति तथा लोगों से प्रेम करता है। वह हमेशा भारत देश की याद में खोया रहता है, तो उसकी पत्नी उसे कहती है कि वह किसी भारतीय लडकी से शादी करके सुखी हो जाए। वह यहीं उसकी दोनों बेटियों के साथ रहेगी+, परंतु पत्नी के प्रेम के खातिर वह वापस नहीं आना चाहता। एक बार लाल अपनी पत्नी को साथ लेकर कलकत्ता, आग्रा, जालंदर को सैर करता है। सोचता है कोई भी छोटी मोटी नौकरी पाकर यहीं भारत में रहेगा, परंतु लाल की पत्नी को भारत देश पसन्द नहीं आया। इसीलिए लाल कसम खाता है कि वह फिर कभी भारत नहीं आएगा और युरोप में चला जाता है। देशप्रेम और पत्नीप्रेम के बीच में ही लाल जी रहा है। जालंदर में घटित घटनाओं के कारण कहानी सुंदर बन गयी है। यह

आत्मनिवेदनात्मक कहानी है। एक अफसर के परिवार से संबंधित दूसरी कहानी है "सागामिट'। जग्गा नामक नौकर की पत्नी के साथ अफसर का छोटा भाई बिक्की शारीरिक संबंध रखता है। अफसर को इस बात का पता है। इसलिए वह जग्गा का वेतन बढाता हैं। जग्गा को यह बात मालूम होनेपर वह रेल के नीचे आत्महत्या करता है। अफसर जग्गा की जान के बजाय भाई के प्रति अपने स्नेह को महत्व देता है। अफसर के परिवार में जग्गा सागामिट तैयार करनेवाला नौकर के रूप में याद किया जाता है। अफसर की पत्नी अपनी सहेली को यह बात बताती है जिससे अफसरी जीवन के सारे राज खुल जाते है। "सागामिट" कहानी अंत तक अत्यंत सुंदर, दिलचस्प बनी है।

शहर के मध्यमवर्ग के घरों में काम करनेवाली दाई गौरी की कहानी है "पिकनिक"। इसमें वकीलसाहब जैसे मध्यवर्ग की अमानवीयता का चित्रण साहनी जी ने किया है। गौरी शहर की गलियों में दाई का काम करती है। उसका पति शराबी है उसे गौरी के पैसे और शरीर से ही मतलब है। बंगले में रहनेवाले लोग गौरी के बच्चों को कही बैठने नहीं देते वह समझते हैं उनके बैठने से जगह खराब हो जाती है। सडक पर जब वह अपने बच्चे को बिठाती है तो वकीलसाहब की पत्नी यह सोचकर वहाँ पर कुत्ते को बाँधती है कि अगर कुत्ता काटेगा तो फिर से वहाँ नहीं बैठेंगे। परंतु कुत्ता भी बच्चों के साथ खेलने लगता है। गौरी अपना विद्रोह प्रकट करते हुए कहती है कि सडक सरकार की है उसे सडक से कोई उठा नहीं सकता। गौरी के व्यक्तित्व द्वारा लेखक ने मध्यमवर्गीय औरत के विद्रोह को स्पष्ट किया हैं।

हवालदार रतनसिंह की कहानी है "मालिक का बंदा"। रतनसिंह रेल्वे पुलिस में काम करता है। वहाँ के गोदाम में सिमेंट और स्लीपरों की चोरी करके वह मंदिर बनवाता है। वह कहता है यह सब भगवान का आदेश है। रतनसिंह के मंदिर बनवाने के पिछे उसके सुपरिटेंडेंट का संरक्षण है। रतनसिंह सुपरिटेंडेंट के प्रति वफादार है इसीकारण वह उनके द्वारा निमंत्रित कवियों की सुविधा के लिए टिकटवाले प्रवासियों को रेल में प्रवेश नहीं देता। सम्मेलन

के लिए आए कवि प्रवासियोंपर होनेवाले अत्याचार देखते रहते है। रतनसिंह चोरी करके मंदिर बनवाता है जो सही नहीं है। रतनसिंह इमानदार है परंतु उसकी इमानदारी में भ्रष्टता है। कहानी अंत तक रोचक बनी है।

भीष्म साहनी के पुराने घर और कश्मिर के पौराणिक खण्डहर की कहानी है "खण्डहर"। इस कहानी में शरद् की पत्नी रचना कश्मिरी लोगों में घुलमिलकर पर्यटन का आनन्द लेना चाहती है। उसे इतिहास के खण्डहर में कोई मोह नहीं है। साहनीजी को अपने पुराने घर में बचपन की यादें सताती है। वहाँ पर स्थित बुआ का चित्र वे अपने साथ ले जाना चाहते है। लेकिन रचना उन्हें ऐसा करने से रोकती है। रचना को बुआ के प्रति थोडी भी श्रध्दा नहीं है। परंतु पुराने प्रेमि-प्रेमिका के खण्डहर के टुकडे को रचना अपने साथ ले जाना चाहती है। यहाँ पर रचना का कला के प्रति दृष्टिकोण स्पष्ट होता है। "खण्डहर" कहानी में लेखक ने पूर्वदर्शन पध्दति को स्वीकार किया है।

दुनिया के बदलाव को ध्यान में लेते हुए व्यवसायी बने पुराने कॅामरेड की कहानी है "गुलमुच्छे।" कॅामरेड व्यवसायी बनने पर सिध्दांततः पार्टी में है। देश की वर्तमान स्थिति में बुध्दिजीवियों का दायित्व जैसे विषयपर कॅामरेड लेखन करता है। उसका कहना है कि देश के बडे नेताओं ने पार्टी के कार्यकर्ताओं को योग्य महत्व नहीं दिया। व्यवहार के कारण वह पूर्णतः पार्टी से दूर हो गया है। सम्मेलन का अध्यक्ष बनने को यह तैयार है, परंतु विमान का किराया चुकाने को वह तैयार नहीं है।

चीनी बौध्दभिक्षु के जीवन त्रासदी की कहानी है "वाङ्चू"। प्रोफेसर तान शान के साथ बौध्द धर्म का अभ्यास करने के लिए वह भारत आया था। भारत के अर्तिंत में ही वह हमेशा खोया रहता है। भारत में जिन स्थानोंपर गौतम बुध्द रहे थे, वहाँ पर वह रहता है। प्रोफेसर तान शान चीन लौट जाते है परंतु वाङ्चू भारत में रहकर बौध्द धर्म का अध्ययन करने लगा। समाजवाद और मार्क्सवाद की दृष्टि से उसने बौध्द धर्म का अध्ययन नहीं किया है। जब वह चीन जाता है तो उसे इसी दृष्टि से सवाल किये जाते हैं। भारत-चीन राजनीतिक

संबंध पर भारत चीन युध्द आरंभ होता है और उसे चीनी जासूस समझकर पुलिस पकडती है। हाजिरी के लिए उसे थाने बुलाया जाता है। परंतु एक दिन सारनाथ के बौध्द आश्रम में वह मर जाता है। यह कहानी धार्मिक स्वतंत्रता के मूल्य एवं बौध्द धर्म की आज के संदर्भ में आलोचना भी करती है।

"अहं ब्रह्मास्मि" भी एक व्यंग्यप्रधान कहानी है।

इसप्रकार अपने परिवेश तथा अनेक व्यक्तियों का चित्रण करते हुए समाज के स्वरूप को व्यंग्यपूर्ण रीति से अनेक कहानियोंद्वारा प्रस्तुत करनेवाला। भीष्म साहनी का "वाङ्चू" कहानीसंग्रह है।

<u>निशाचर</u> :-

मानवीय रिश्ते और संवेदनाओं को अभिव्यक्त करनेवाला कहानी संग्रह है "निशाचर"। "निशाचर" का केंद्रबिंदु व्यक्ति नहीं बल्कि "मनुष्य" है।

परिवेश कैसा भी हो अगर वहाँ प्रेम मिले तो मनुष्य उस परिवेश में रहता है। चाचा मंगलसेन ने अपनी अधिकांश जिंदगी एक गली में बितायी है। बलराम को चाचा के प्रति कोई लगाव नहीं, परंतु अपना कर्तव्य पूरा करने के लिए वह चाचा को अपने घर डिफेन्स कॉलोनी ले आता है। बलराम की पत्नी को भी चाचा के प्रति लगाव नहीं है। चाचा को बलराम का घर पसंद नहीं आता और वह अपनी गली में वापस आता है, जहाँ पर गलि के लोगों से उसे स्नेह मिलता है। गली के लोगों का चाचा मंगलसेन से कोई रिश्ता नहीं फिर भी वे चाचा की देखभाल करते हैं। तो बलराम की पत्नी चाचा को अपना होकर भी अपना नहीं समझती। इसीकारण चाचा मंगलसेन गलि में वापस लौट आते है। इस कहानी में एक होमियोपैथीक डॉक्टर है जिसने कोई उपाधि प्राप्त नहीं की। फिर भी शाम को उसके पास इलाज के लिए अनेक लोग आते हैं। वह पैसे भी कम लेता है। उपाधिहीन इस डॉक्टर के पास मरीज आते हैं परंतु वहीं पर उपाधिप्राप्त डॉक्टर के पास कोई नहीं जाता। बलराम मंगलसेन को लेने जाता है तो

मंगलसेन उसे कहता है कि उसे इस गलि में ही मरने दो। इसप्रकार चाचा मंगलसेन और उपाधिहीन डॉक्टर के व्यक्तित्व में अपनी मिट्टी की चाहत है, परंतु बलराम की पत्नी में मानवीय असहिष्णुता है।

जिन्दगी को सिर्फ सुखचैन की दृष्टि से देखनेवाली मालती की कहानी है "कण्ठहार"। मालती की बेटी अपंग है। मालती को लगता है कि उसकी अपंग बेटी ने उसका सुखचैन हडप किया है। फिर भी मालती बेटी का इलाज एक अच्छे डॉक्टर से करवा रहीं है। मालती और रमेश एक दूसरे को अपराधि कहते हैं और सोचते है कि उनके कारण सुषमा अपंग जन्मी है। सुषमा भी कहती है कि माँ–बाप के कारण ही वह अपंग जन्मी है। माई सुषमा की सेवा करती है। रमेश और मालती समझते है कि माई पैसों के लिए सुषमा की सेवा करती है। परंतु माई समझती है कि वह सुषमा की सेवा कर ईश्वर की सेवा कर रही है।

"निशाचर" कहानी में रात के वक्त कागज के टुकडें और रद्दी सामान जमा करनेवाली "केसरो" और उसके बच्चों का वर्णन है। केसरो को हमेश डर है कि गली का जमादार आनेपर उसे एक भी कागज नहीं मिलेगा। जमादार सारे कागज जला देगा। साहनी जी ने कहानी में यह भी संकेत दिया है कि यही जमादार केसरो की बच्ची पर जबदरस्ती करता है। "निशाचर" कहानी का शीर्षक अत्यंत सार्थक बना है।

जाम्बिया से कराची होते हुए भारत लौटनेवाले एक भारतीय प्रवासी की कहानी है "सलमा आपा"। सलमा आपा का भाई इस प्रवासी को पाकिस्तान में अपने घर में पनाह देता है। उस वक्त भारत–पाकिस्तान में तनाव बढ रहा था। परंतु सलमा आपा के भाई को मालूम नहीं था कि वह अपने देश के दुश्मन के नागरिक को घर में पनाह दे रहा है। मन की अनुभूति के आधारपर ही भारतीय प्रवासी सलमा आपा के भाई का घर खोज लेता है।

"संभल के बाबू" इन्सान के बदलते रिश्तों की कहानी है। जवानी के दिनों में भीष्म साहनी पर फिल्मों का गहरा प्रभाव था। इसीकारण साहनी जी ने अपने नौकर को दरवाजा देर से खोलने पर तमाचा मारा था। परंतु नौकर नत्थु चुप बैठा रहा था। साहनी के माँ बाप ने

समझाया कि नौकरों को नहीं मारना चाहिए। उनके दूसरे बेटे रमेश ने नत्थू को मारना चाहा तो नत्थू ने हाथ पकड लिया। भीष्म साहनी नत्थू को नौकरी से निकालने की कोशिश करते है तो वह नौकरों की युनियन सेक्रेटरी के पास शिकायत करता है। सेक्रेटरी कहता है कि नत्थू के जितने पैसे हुए है नत्थू को दे नहीं तो वह भीष्म साहनी के घर के सामने धरना देंगे। लेखक कहता है मानवीय संबंध खत्म हो गए है। मालिक नौकर के बीच अधिकार और आर्थिक संबंध बढ रहे हैं।

साम्प्रदायिकता की आग का शिकार बने व्यक्ति की कहानी है "जहूर बख्श"। इसी साम्प्रदायिकता के कारण जहूर के बेटे और बीबी की मौत हुई है। उसके घर में आग लगाई जाती है। उस आग में से वह पाण्डुलिपियाँ और किताबें बचाता है जो अधजली है। "जहूर बख्श" कहानी के माध्यम से लेखक पूछता है कि लोग साम्प्रदायिकता की आग का नुकसान कब समझेंगे ?

नये लेखकों की अभावग्रस्त जिन्दगी, अवहेलना, उपेक्षा की कहानी है "दिवास्वप्न"। इसमें साहनीजी ने अपने अनुभव बताये है। प्रकाशकद्वारा लेखकों का शोषण होता है। नवीन साहित्य पढने को लेखक को पाठक नहीं मिलते। प्रसिध्द लेखक बननेपर ही लेखक को पैसा मिलता है। लेखक को लगता है कि सफल लेखक बनना एक "दिवास्वप्न" ही है।

आज की खोखली राजनीति, राजनेता और बडे अफसरों के रिश्तोंपर प्रकाश, जेलव्यवस्था, पत्रकारिता आदि पर प्रकाश डालनेवाली कहानी है "मुर्ग–मुसल्लम"। आजादी पाने के लिए लोग जेल जाकर यातनाएँ सहते थे। परंतु आज कल जेल में बीडी से लेकर अच्छे भोजन तक सब कुछ मिलता है। आज कल लोग आराम करने, ऐयाशी करने जेल में जाते है। नेता के कारण तरक्की मिलेगी यह सोचकर ही कहानी का जेलर नेता के भतीजे की अच्छी भोजन व्यवस्था जेल में करता है। भतीजा जेल से छुटनेपर नगरपालिका उपाध्यक्ष बनता है। जेल के कैदियों की अच्छी भोजन व्यवस्था हो इसलिए पुलिस रिटज होटेल के बेगुनाह, गरीब बावर्ची को पकडती है।

भारतीय रेलव्यवस्था की अनियमितता, अव्यवस्था और यात्रियों की मानसिकता को स्पष्ट करनेवाली कहानी है "पोखर"। यात्रावृत्तांत शैली में लिखे इस कहानी से रेलयात्रा का चित्र पाठकों के सामने आता है।

पति–पत्नी और परस्त्री के रिश्तों को स्पष्ट करनेवाली कहानी है "विकल्प"। मुन्नी को देवी, प्रेयसी कहनेवाला उसका पति शादी के कुछ साल बाद ही शादी को बोझ समझता है। आधुनिक रहन सहन के कारण मुन्नी पति को छोडना नहीं चाहती। पति उसके सामने प्रस्ताव रखता है कि वह और उसकी दूसरी प्रेयसी एक कमरे में रहेंगे, मुन्नी दूसरे कमरे में रहेगी और बच्चों को होस्टेल में दाखिल करेंगे। इसपर मुन्नी कोई फैसला नहीं कर सकती। वह अपना दु:ख मौसाजी को बताती है। मौसाजी ने अनेक टूटते घरों को सलाह देकर बचाया है। परस्त्री मामलों को सुलझाया है। लेकिन आज तक ऐसा सुझाव नहीं दिया कि एक ही घर में पति–पत्नी अलग अलग रहे। मुन्नी के पति का प्रस्ताव सुनकर मौसाजी को लगता है सचमुच जमाना बदल गया है।

"नदामत" हॉकी दर्शकों की भावनाएँ तथा मानव मन की अजीब गुत्थी को सुलझाने की कोशिश है। इस कहानी में पेशावर की टीम और लेखक के कॉलेज की टीम में हॉकी का मैच होनेवाला है। दर्शक पहले समझते है कि अगर गाँव की टीम पेशावर टीम से हार जाए तो उनकी नाक कट जाएगी। परंतु पेशावर टीम का कप्तान असगर अली जख्मी होनेपर दर्शक दु:खी हो जाते है। "नदामत" कहानी मानवीय मन की अजीब भावना आंदोलन को सुलझाने की कोशिश हैं।

"सरदानी" अनपढ, गँवार, स्त्री–मर्यादा का पालन करनेवाली पंजाबी औरत की कहानी है। वह अपनी जान जोखिम में डालकर मास्तर करीमदीन को साम्प्रदायिकता की आग से बचाती है। उसके मन में कट्टरपंथिता तथा साम्प्रदायिकता की भावना नहीं। इस कहानी में लेखक ने साम्प्रदायिक दंगों के समय होनेवाली लोगों की मानसिकता, भय, अविश्वास को स्पष्ट किया है।

जीवन की विडंबना को स्पष्ट करनेवाली कहानी है "दहलिज"। इस कहानी में एक ऐसा व्यक्ति है जो मौत से डरता है। वह समझता है प्रत्येक व्यक्ति रोग के जंतू लेकर अता है। प्रेम के कारण स्नायुजल में तनाव उत्पन्न होने सेउसकी आयु कम होगी इसीकारण उसने शादी नहीं की। टेलिफोन पर सिर्फ बुरी खबरे ही मिलती है। ऐसा समझकर उसने टेलिफोन हटाया है । दूसरी व्यक्ति है अमरनाथ जिसे लकवा हुआ है। जिन्दगी के लिए वह मौत से संघर्ष कर रहा है। उसका बेटा मर गया है, बेटी और पत्नी बिमार है फिर भी अमरनाथ स्वयं की जिन्दगी जीने के लिए बीमा एजन्ट बना है। इसप्रकार जीवन की विडम्बना को स्पष्ट करनेवाली कहानी है "दहलिज"।

"अतीत के स्वर" प्राचीन मन्दिर के मानचित्र बचानेवाले पुरातत्ववेत्ता और अतीत के अध्येता की कहानी है। अतीत से मोह होने के कारण वह अतीत को बचाना चाहता है, वर्तमान के प्रति उसे कोई मोह नहीं है। इसी चाहत के कारण वह बाढग्रस्त लोगों को नहीं बचाता, बाढ में भी वह मंदिर के मानचित्र बनाता रहता है।

इसप्रकार "निशाचर" कहानी संग्रह में भीष्म साहनी ने मानव रिश्तों को स्पष्ट करने की कोशिश की है। अन्याय–अत्याचार को स्पष्ट करने वाले कहानी संग्रह का नाम है "निशाचर"।

<u>पाली</u> :–

1989 में प्रकाशित भीष्म साहनी का छटा कथासंग्रह है "पाली"। देश–विभाजन के समय निर्वासित हुए मनोहरलाल और उनकी पत्नी की कहानी है "पाली"। अन्य निर्वासितों की तरह अपना घर छोडकर ये दोनों पाकिस्तान से दिल्ली आये है। निर्वासितों के काफिले ट्रकों में बैठकर आ रहे थे उनमें ही ये दोने आये थे। उनकी बेटी को अमृतसर के पास दंगाइयों ने मारा। बेटा पाली पीछे ही रह गया।

दिल्ली में मनोहरलाल सब कुछ भूलने की कोशिश कर रहा है। वह बाजार में ठेला चलाने लगा। बच्चों के बिना कौशल्या की हालत पागल सी हो गयी है। इधर पाकिस्तान में निपुत्रिक जेनब और शकूर को पाली रास्ते के किनारे मिलता है। खुदा की देन समझकर वे पाली का पालन करने लगे। पाली का धर्मांतर करके उसे 'इस्लाम' धर्म में दीक्षित किया जाता है। पाली का नामांतर इल्ताफ हो गया। इल्ताफ अब मस्जिद के स्कूल में जाने लगा, नमाज पढने लगा, कुरान की आयतें कंठस्थ करने लगा। इधर मनोहरलाल दिल्ली के शरणार्थियों के दफ्तर में इसलिए जाता रहता है कि शायद पाली मिल जाए। दो साल बाद उसे पता चलता है कि पाली शकूर जेनब के पास है। शकूर जेनब पाली को वापस भेजने तैयार नहीं है। मनोहरलाल कई भारतीय अधिकारी, पुलिस, समाजसेवक के साथ शकूर के घर जाता है तो भी शकूर पाली को भेजने को तैयार नहीं। पाली का मामला अब धर्म का मामला होता है। आखिर कौशल्या के मातृहृदय का आदर करते हुए जेनब पाली को लौटता है परंतु एक शर्त रखता है कि हर साल ईद के दिन इल्ताफ (पाली) को उनके पास भेजा जाए।

इधर दिल्ली आनेपर पाली को हिंदू धर्म धर्मांतरीत किया जाता है और नाम रखा जाता है यशपाल। परंतु यशपाल अपने बचपन के संस्कार नहीं भूलता। वह नमात पढता है, माँ–बाप को अम्मी–अब्बा कहता है। इधर जेनब को आशा है कि ईद के दिन इल्ताफ जरुर आयेगा। इसप्रकार कौशल्य और जेनब की दृष्टि से पाली उनका बेटा है परंतु चौधरी और मौलवी की दृष्टि से वह हिन्दू या मूसलमान है। देशविभाजन की साम्प्रदायिक पृष्ठभूमि में लिखी महत्वपूर्ण कहानी है "पाली"।

"झुटपुटा" कहानी में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद हुए साम्प्रदायिक दंगों का वर्णन है। कहानी में दिल्ली के मोतीनगर और करोल बाग इलाका ऐसा है जहाँ पर पाकिस्तान से आए दंगा पीडित हिन्दू सिक्खों के घर है। इंदिरा गांधी हत्या के बाद गुण्डों ने इन सिक्खों के घर जलाए, उनको मार डाला। हिन्दू लोग जान जोखिम में डालकर सिक्खों के घर और जान बचाने में लगे है। गुण्डों ने एक हिंदू व्यक्ति की कार यह समझकर जलाई की वह सिख

सरदार सेठ की है। कहानी में दंगों के समय घर में छिपनेवाले नेता दंगे खत्म होनेपर लोगों को शांति उपदेश देने को निकलते हैं। कहानी में सामान्य लोगों में जीवित मानवतावाद स्पष्ट हुआ है। हिंदी साहित्य को एक नया मोड देने की दृष्टि से "झुटपुटा" शीर्षक अत्यंत उचित है।

पंजाबी आतंकवाद पर आधारित है "नैसिखुआ"। इस कहानी में आतंकवाद की जड में जाने की कोशिश लेखक ने की है। कहानी में आतंकवादी अमरजीत ने गुरू बलिदान, साहस, मुस्लिम अन्याय के विरूध्द सिक्खों के संघर्ष और कुर्बानि के किस्से संस्कार रूप में ग्रहण किये है। सिक्ख पंथ की मुक्ति और सेवा के लिए अमरजीत आतंकवादी बना है। किताब दूकानदार हरवंशलाल के हत्या की जिम्मेदारी अमरजीत पर सौंपी गयी है। परंतु हरवंशलाल के हाथ में गुरू का कडा देखकर अमरजीत उनकी हत्या नहीं करता। अमरजीत समझता है कि हरवंशलाल गुरू का सेवक है। अमरजीत उनकी हत्या नहीं करता। अमरजीत समझता है कि हरवंशलाल गुरू का सेवक है। अमरजीत का साथी हरवंशलाल की हत्या करता है। इस कहानी में लेखक ने संकेत दिया है कि कई स्वार्थी लोग और विदेशी शक्तियाँ पंजाब के नौजवानों को दिभ्रमित कर रही है। येही शक्तियाँ देश का विभाजन करना चाहती है।

नये लेखकों की आर्थिक विपन्नता, उपेक्षा, प्रशंसाप्रियता, आकाशवाणी अफसरों की कहानी स्पष्ट करनेवाली कहानी है "प्रादुर्भाव"। अन्य लोगों को सौ–सौ रूपये देनेवाले आकाशवाणी के निदेशक शिवानंद को चालीस रूपये देते हैं। आकाशवाणी के निदेशक अपने कर्मचारियों को समझाते है कि चेक हमेशा बंद लिफाफे में देने चाहिए बल्कि दूसरों को पता नहीं लगे कि दूसरे को कितने पैसे मिले। चालाक अफसरशाही का चेहरा कहानी में उभरकर आया है।

यथार्थ जीवन से और अपने आपसे भी न लड़ सकनेवाले नौजवान लेखक की कहानी है "देवेन"। देवेन की माँ चाहती है कि वह शादी करे परंतु अपनी ढलती उम्र में भी देवेन शादी नहीं करता। वह अपनी माँ के मन का विश्लेषण करता है माँ चाहती है मैं शादी करूँ

ताकि बहु मुझपर ओर वह बहुपर हुकूमत करे। अपने चरित्र का वह विश्लेषण नहीं कर पाता। साहित्य और जीवन खोजने वह पहाडियों पर जाता है। परंतु उसे यह पता नहीं कि यथार्थ जीवन माँ के रुप में उसके घर में है। कहानी के अन्त में एक बुढी औरत से देवेन को साहित्य की प्रेरणा मिलती है।

आज की न्यायव्यवस्था और अफसरशाहीपर लिखी व्यंग्यात्मक कहानी है "मरने से पहले"। कहानी के नायक की जमीन बीस साल से दूसरे के कब्जे में है। उसे मुक्त करने वह अदालत जाता है, अफसरों को रिश्वत देता है। परंतु काम न होने के कारण रिश्वत से भी उनका विश्वास उठता है। मरने से पहले एक बुढे वकील को जमीन दिलवाने का वादा कर जमीन पर अपना कब्जा करने के सपने वह देखता है। जमीन मालिक यह सोचते मरता है कि उसने जमीन वकील को मुफ्त में दे दी। आजकल न्यायदान में विलंब लगता है जो प्रशासनव्यवस्था और न्यायव्यवस्था का दोष है।

"सेमिनार" कहानीद्वारा लेखक स्पष्ट करता है कि व्यापारी और पूँजीपतियों ने पैसे के बल पर कलाकारों और साहित्यकारों को खरीदा है। सेमिनार के विज्ञापन इस बात के साक्षी है। आजकल पैसे के सामने सामान्य जनता और विद्वान कलाकारों का कोई स्थान नहीं है। पूँजीपतियों द्वारा गरीबों को खरीदने की चालाकी "सेमिनार" कहानी में स्पष्ट की है।

"चोरी" एक नये दौर की कहानी है। वीणा और उसकी सहेली द्वारा पता चलता है कि बम्बई में फायदेमंद वस्तुओं की चोरियाँ होती हैं। उच्चशिक्षित व्यक्ति को वहाँ पर कंडक्टर की नौकरी करनी पडती है। परंतु वह उच्चशिक्षित लड़कियों के साथ लगाव रखता है।

मदनगोपाल का भंडाफोड करनेवाली कहानी है "खुशबू"। पहले गरीब होनेवाला मदनगोपाल दो नंबर के पैसों का धनी होता है। पैसों के बलपर वह मंत्रियों से संबंध स्थापित करके अपने काले काम करवाता है। उसके दरियादिल होने के पिछे अपना काला धन छुपाने की चाल है। मदनगोपाल के दाहसंस्कार में वही लोग आते है जिन्हें उसके पैसों का फायदा

हुआ है। भीष्म साहनी इस कहानी द्वारा बताते है कि आजकल पैसा ही सबकुछ है। पैसे के कारण दोस्ती बनती–बिगड़ती है। अपने भले के लिए लोग पैसेवालों का गुणगान करते हैं।

अर्जुनदास की आर्थिक और मानसम्मान की दृष्टि से असफल जिन्दगी को बतानेवाली कहानी है "झूमर"। इसमें अर्जुनदास भावनाशील व्यक्ति है। अपने हानिलाभ का विचार किए बिना ही वह किसी भी काम में लग जाता है। लेखक बताते हैं कि जिंदगी के फैसले सोच समझकर नहीं किये गये तो जिंदगी जैसी बहती है उसमें इन्सान भी बहता चला जाता है।

"आवाजें' पाकिस्तान से आए शरणार्थियों के जीवन संघर्ष की कहानी है। दिल्ली के एक मुहल्ले में पाकिस्तान से आए शरणार्थी बस गए है। उनके घर, देश तो बदल गए परंतु भाषा, संस्कृति, पोशाख, रीतिरिवाज, परम्परा आदि अपने साथ लाए है। इसमें मक्खनलाल अपनी गाय लेकर आया है जो अब नौकरी चाहता है। डॉ.मोहकमचंद के कारण एक फैक्टरी के चौकीदार की नौकरी उसे मिलती है,परंतु अपनी इमानदारी के कारण वह नौकरी से निकाला जाता है। डॉ.मोहकमचंद समाजसेवा के कारण दिल्ली महानगरपालिका में लोकप्रतिनिधि बनता है। मक्खनलाल की बीवी और माँ के बीच दूध दही को लेकर झगडा होता है। खुले दिल का आदमी होने के कारण वह पड़ोसियों को सब कुछ बताता है। कहानी के शरणार्थी दिनभर रोजगार के लिए भटकते हैं और शाम को बस्ती में आकर भविष्य की चिंता करते हैं, सरकार और महानगरपालिका को भलाबुरा कहते हैं। लोगों पर अपना प्रभाव जमाने के लिए वकील मणीलाल अपने घर में पार्टी देते है। मक्खनलाल पार्टी में गीत गाकर अपना दु:ख व्यक्त करता है। लाला दीवानचंद की पर्दे में रहनेवाली बहूबेटियाँ अब नौकरी के लिए घर से बाहर जाने लगी है। शरणार्थियों की दूसरी पीढी में लोगों का रहनसहन बदल गया है। अनेकों ने अपने घरों में किराएदार रखे हैं। मकान मालिक और किराएदारों में झगड़े होते है। मक्खनलाल के बेटे अब अच्छा व्यापार करने लगे है। दोनों ने माँ–बाप का भी बँटवारा किया है। इंजिनिअर आहुजा के दोनों बेटे इंग्लंड में स्थायिक हुए हैं। अंग्रेजी सभ्यता उनमें पूरी तरह उतर

आयी है। उनकी बेटी सरला में भी अंग्रेजी सभ्यता उतरी है परंतु वह अपने पुराने मकान में ही रहती है। कोहली अपना गम भूलाने के लिए शराबी बना है, उसकी पत्नी भी उससे तंग आ गई है। देवकी के पति ने विदेशी औरत से शादी की है। देवकी को घर से निकालने के लिए उसकी सॉस ने घर में किराएदार रखे हैं। नौकरी करनेवाली देवकी ने नया घर बनाया है, परंतु वह पति के घर का कब्जा नहीं छोडना चाहती। देवकी की सास उससे हारकर मंदिर जाने लगी है। चढ़ा के बेटे में अपनी नवविवाहिता पत्नी को जलाया है। लोग चढ़ा के खिलाफ अड्डा मोर्चे निकालते है। मुहल्ले के लोग अपने बेटे–बेटियों की शिक्षा पर ज्यादा ध्यान देते है। "आवाजें' के पात्र, वातावरण, घटना देखकर लगता है कि लोग सही अर्थ में भारतीय भूमिपर बस गए है, इस मिट्टी के हुए है।

इसप्रकार "पाली" कहानीसंग्रह में लेखक भीष्म साहनी मानव जीवन के सहज सुलभ प्रसंगों को यथार्थ रुप में प्रकाशित करते है। अत्यंत गौण प्रसंग की सहाय्यता से यथार्थ को अभिव्यक्त करना आपकी विशेषता है। "अशांत", "भाग्यरेखा", "नीली आँखे", "मुर्गी की कीम्त", "चीफ की दावत', "घर की इज्जत" आदि कहानियाँ यथार्थ की सजीव रेखाओं में प्रस्तुत की है।

इसप्रकार "पाली" कहानीसंग्रह की कहानियों द्वारा लेखक भीष्म साहनी ने मानवजीवन के सहज सुलभ प्रसंगों को यथार्थ की सुंदर माला में एकत्रित किया है।

<u>शोभायात्रा</u> :–

युग सापेक्ष सामाजिक यथार्थ को स्पष्ट करनेवाला यह कहानीसंग्रह है। भीष्म साहनी का चौथा कहानीसंग्रह है "शोभायात्रा"। इस कहानीसंग्रह की कहानियाँ भी कुछ नए सामाजिक मूल्यों को स्पष्ट करती है।

"निमित्त' देशविभाजन की हिन्दू–मुस्लिम मानसिकता को स्पष्ट करनेवाली कहानी है। इसमें राजगढ फैक्टरी के मॅनेजर की क्रूरता और चालाकी का चित्रण किया गया है। दुनिया में

होनेवाली प्रत्येक घटना के पिछे यह मॅनेजर भाग्य और भगवान को कारण मानता है। व्यक्ति केवल निमित्त है। इसीकारण शेरसिंह ड्रायव्हर इमामदीन को बचाता है परंतु बाकी बारह लोग दंगे में मर जाते है।

"भटकाव" कहानी में तीन बहनों में शादी से पहले प्रेम और प्रेमी हँसी–मजाक का विषय है। इन बहनों को इस बात की चिंता नहीं कि उन्हीं के कारण उनके प्रेमियों का जीवन बरबाद हुआ है। लेखक भीष्म साहनी ने प्रेम ओर स्वार्थ के भटकाव को इन तीन बहनों के द्वारा स्पष्ट किया है।

भारतीय अफसरों की पत्नियों के बदलते सामाजिक मूल्य कोस्पष्ट करने वाली कहानी है "मेड इन इटली"। इसमें अफसर बलवंत की पत्नी समझती है कि प्रत्येक विलायती चीज महीन है। इसीकारण वह घर में विदेशी वस्तुओं का इस्तेमाल करती है। ऐसी वस्तुओं के इस्तेमाल पर उसे अभिमान है। इटली का एक दुकानदार जब उसे भारत में बना एक बैग देता है तो उसका घमंड टूट जाता है। अफसर की पत्नी मीरा बैग तो लेती है। परंतु उसपर "मेढ "मेड इन इटली" लेबल लगाकार ही। सिनेमाघर में एक व्यक्ति का हाथ उसकी कमर में लगता है तो वह पुलिस तथा पति द्वारा उसकी पिटाई कराती है। परंतु इटली में इटालीयन व्यक्तिद्वारा हाथ चूमना, उसकी काली आँखे, साड़ी, सुंदरता की प्रशंसा करना उसे अच्छा लगता है।

आधुनिक जीवन की चहल–पहल और संघर्षो में संवेदनहीन हुए निम्न मध्यवर्ग का चित्रण करनेवाली कहानी है "खिलौने"। इसमें बच्चे और खिलौने के माध्यम से आधुनिक जीवन की संवेदनहीनता का चित्रण किया है। निम्न–मध्यवर्ग अपने स्वार्थ के लिए दूसरों से दोस्ती रखता है। कहानी के वीणा–दिलीप अपने बच्चों के प्रति संवेदनाहीन हुए है।

सिध्दांतों और आदर्शों की दुनिया में ही एक इमानदार आदमी इज्जत से रह सकता है। इसका वर्णन करनेवाली कहानी है "फैसला"। हीरालाल समझता है कि सरकारी नौकरी का उसूल सिर्फ सरकारी फाईल है। सरकारी अफसर को फाईल के साथ ही चलना चाहिए।

हीरालाल व्यवहारी है। लेकिन जजसाहब शुक्लाजी जैलदार के केस में सत्य को समझकर अपना फैसला देते हैं तो उनपर भ्रष्टाचार का इल्जाम लगता है। इसीकारण वह जज की नौकरी छोडकर दर्शनशास्त्र का अध्यापक बन जाता है।

"धरोहर" कहानी में एक बूढी माँ फल की उपेक्षा न करते हुए आम का पेड लगाती है। यही पेड आधुनिक जमाने की बहू बेटे को तकलिफ का विषय लगता है। ये दोनों नहीं चाहते की स्कूल के बच्चे तथा पडोसी आम के फल खाए और वे पेड की डालियाँ कॅाटते है। अपनी माँ की अपेक्षा को स्वार्थ के कारण ये दोनो पूरा नहीं कर सकते।

"रामचन्दानी" गांधीवादी व्यक्ति की कहानी है। गांधीवादी रामचन्दानी अंग्रेज होटल में चमचों के होते हुए भी हाथ से खाना खाता है, वेटर को टिप नहीं देता। यह बात रामचन्दानी के दोस्त मुख्तार सिंह तथा अन्य अंग्रेजी ग्राहकों को पसन्द नहीं आती। इसकारण अंग्रेजी मालकीन होनेवाले उस होटल में रामचन्दानी का खाना बन्द होता है। रंगभेद की कुटिल नीति को अपनाकर अंग्रेजी ग्राहकों ने होटल मालकिनपर दबाव डाला और रामचन्दानी तथा उनके दोस्तों का भोजन बंद किया।

"लीला नन्दुलाल की" एक स्कूटर चोरी मुकदमे की कहानी है। सरकारी कार्यालयो में इमानदारी तथा सत्यता से कोई काम नहीं होता। स्कूटर मालिक को पुलिस स्टेशन तथा एल.आय.सी. ऑफीस में अनेक चक्कर लगाने पडते हैं। पुलिस थाने में हमेशा उत्तर मिलता है कि स्कूटर मिलने पर आपको खबर दी जाएगी। जब वरिष्ठ अधिकारी इस मामले में ध्यान देता है तो इन्स्पेक्टर स्कूटर मालिक के साथ इन्सानियत से पेश आता है। एल.आय.सी. ऑफिस का हेडक्लार्क तो स्कूटर मालिक से कभी बात नहीं करता था, एजन्ट नन्दलाल के कारण वही हेडक्लार्क स्कूटर का भुगतान एक ही दिन में करता है। एक दिन स्वंय चोर ही बताता है कि उसने स्कूटर चुराया है। यह मुकादमा अदालत में अनेक सालों तक चलता है, यहाँ तक कि स्कूटर खण्डहर वस्तू के समान हो चुका है। फिर भी जज का फैसला नहीं होता। आज की पुलिस व्यवस्था और न्याय व्यवस्था पर गहरी चोट करनेवाली कहानी है "लीला नन्दुलाल की"।

जातिव्यवस्था का शिकार बने बिहार के दंगापीडित, बेसहारा हरिजन की कहानी है "सड़कपर"। बिहार छोडकर दिल्ली आया हुआ हरिजन अब दिल्ली की सडकों पर दर–दर की ठोकरे खा रहा है।

"अनूठे साक्षात" कहानी में भीष्म साहनी ने घर की नौकरानी धर्मो, बनारस का रिक्षावाला और सास–बहू के विवादों को चित्रित किया है। धर्मो का पति उसे सदैव सताता है परंतु धर्मो अपने नारी धर्म का पालन करना चाहती है। रसोई घर में पुरूष काम करना उसे अच्छा नहीं लगता इसीकारण वह लेखक के घर से नौकरी छोड देती है। वह समझती है कि रसोई घर में काम करना नारी का धर्म है।

"बनारस" कहानी में बनारसी रिक्षावालों की गरीबी, चालाकी, इमानदारी भ्रष्ट पुलिस व्यवस्था का वर्णन है। "भेंट" कहानी में सामान्य बातों से सास बहू में चलनेवाला विवाद और माँ के निष्पाप पुत्र प्रेम की चर्चा है।

धर्म के नाम पर अंधे बने मानव की संकुचित भावनाओं पर गहरी टीका करनेवाली कहानी है "शोभायात्रा"। आदर्श धर्म को माननेवाला राजा है 'उदयगिरी'। उसके राज्य में कुछ पुराणपंथी लोग मंदिर में बकरे की बली चढाना चाहते है। राजा अपने अनुयायों के साथ इन लोगों को हिंसक कार्य से परावृत्त करने की कोशिश करता है और सफल भी होता है। परंतु उसके लिए राजा जो मार्ग अपनाता है, उससे पाठक को इस कहानी का व्यंग्य और मानव मन की कमजोरी का पता चलता है।

अपने परिवेश के प्रति भीष्मजी कितने सजग है इसका पता हमें "शोभायात्रा" कहानी संग्रह से मिलता है। भीष्म साहनी के विचारों को साक्षात उतारने में "शोभायात्रा" कहानी संग्रह सफल हुआ है।

पटरियाँ :-

किरमिच के दलाल केशोराम की कहानी है "पटरियाँ"। केशोराम एक मध्यम वर्ग का दलाल है। वह समझता है दुनिया में पैसा ही सबकुछ है। बाकी सब झूठ है बकवास है। पैसा, ताकत, रोबदाब से कोई भी चीज बडी नहीं है। दुनिया में जिसके पास पैसा है उसी के पास सबकुछ है। केशोराम गरीब है इसलिए समाज और घर में उसकी उपेक्षा होती है। मध्यमवर्गीय व्यक्ति की मन की द्विधावस्था को स्पष्ट करना कहानी का उद्देश्य है।

"तस्वीर" कहानी में टूटी हुअी विधवा के मानसिक स्थिति का हृदयस्पर्शी चित्रण है। विधवा को पति के जीते जी पति का प्रेम नहीं मिला। विधवा होनेपर उसका ससूर भी उसे बोझ समझने लगता है। बच्चों को भी वह अपना नहीं बना सकती।

क्रांति के दिवास्वप्न देखनेवाले क्रांतिकारी के मन का चित्रण करनेवाली कहानी है "नया मकान"। गिरिजा कामगार युनियन का नेता है। वह सोचता है कि एक दिन क्रांति जरूर आ जाएगी। समाजवादी क्रांति के स्वप्न देखते वह कुछ काम नहीं करता। उसकी पत्नी उसे घर बिठाती है। घर में वह अच्छा काम करता है परंतु रात को शराब पीकर समाजवादी क्रांते के सपने में खो जाता है । नेतागिरी के दिन वह अभी तक नहीं भूला है।

"ललक" एक अभावग्रस्त बचपन होनेवाले लड़के की कहानी है। उसका एक दोस्त है हरदेव जो पड़ोस में रहता है और अमीर है। उसी की तरह यह लडका अमीर जिन्दगी जीना चाहता है, उसकी नकल करना चाहता है परंतु गरीबी के कारण वह कुछ नहीं कर पाता।

"मौकापरस्त" आज की राजनीति पर करारा व्यंग्य करनेवाली कहानी है। मानवीय मन की संवेदना, भावना को तिलांजली देकर पार्टी अनुयायी की मौत होने पर भी उसका राजनीतिक लाभ उठाने की चेष्टा करनेवाले नेता की कहानी है।

अध्यापिका गोविन्दमाँ की कहानी है "रास्ता"। गोविन्दमाँ का पति अपनी माँ के कारण उसे घर में नहीं रख सकता। गोविन्द माँ की मजबूरी यह है कि उसने उसे पति माना है और माँ की इच्छा पति की मजबूरी है। कुछ सालों बाद गोविन्दमाँ की जिंदगी में उस्के

मालकिन के भाई का सेक्रेटरी आता है जिसे वह अपना दोस्त समझती है। इस कहानी में गोविन्दमाँ के मालकिन की कहानी भी है जो अपने पति को छोडकर अपने दोस्त के साथ रहती है। मालकिन पति की उपेक्षा और नीरस जिन्दगी से उब गयी है। दूसरे के साथ रहना उसकी मजबूरी हैं। मालकिन का भाई नेता है। सामाजिक प्रतिष्ठा के खातिर वह अपने बहन की लीलाओं को जानकर भी कुछ नहीं कर सकता। यह उसकी मजबूरी है। ऐसा लगता है कि यह कहानी भीष्म साहनी के मार्क्सवादी विचारों के खिलाफ है।

"परों के निशान", "इंद्रजाल" इन दो कहानियों में बीमार मनुष्य के हृदय की घूटन स्पष्ट हुई है।

मन ही मन टूटे हुए एक अवकाश प्राप्त इंजिनिअर की कहानी है "जख्म"। इंजिनिअर का बेटा मर गया है, बेटी पागल हुई है। इंजिनिअर ने जवानी में देश और समाज के लिए कुछ नहीं किया परंतु अब वह देश की समस्याओं पर लिखता है। विज्ञान, धर्म, नीतिशास्त्र पर आधारित धर्म की वह जरूरत समझता है। अपने विचारों के कारण वह खुद को समाजसेवक समझता है। कहानी के युवक को इस समाजसेवक से चिढ़ है। वह समाजसेवक की पिटाई करता है। झूठे नकाबपोश समाजसेवकोंपर इस कहानीद्वारा लेखक ने व्यंग्य किया है।

"अभि तो मैं जवान हूँ" कहानी वेश्या जीवन तथा उनकी गली का चित्रण करनेवाली है। गाँवों में सूखा पडने के कारण ये वेश्याएँ शहर में आ गयी है। उनके पास नौकर, सरकारी नौकर, फौजी जवान, शराबी, लौंडे सभी भूखा तन लेकर आते है और अपने तन की प्यास बुझाते है। अगर कोई उनको स्तन का दूध माँगता है तो वह उनहें गालियाँ देती है, ग्राहकों के पैसे चुराती है। वेश्याओं के अड्डे को चलानेवाला एक मुस्लिम मियाँ है, उसके अनेक चमचे है। इस कहानी में वेश्याओं का जीवन सजीवता से हमारे सामने आता है।

"डोरे" अर्चना और गिरीश के परकिया प्रेम की कहानी है। गिरिश अर्चना से प्रेम करता है परंतु माँ बाप की इच्छा के कारण उससे शादी नहीं कर सकता। वह दूसरी लडकी

से शादी करता है। फिर भी अर्चना गिरिश से प्रेम करती है। वह चाहती है गिरिश उसके पास हमेशा आता रहे, उसे प्रेम करे। वह नहीं चाहती कि गिरिश पत्नी से प्रेम करे। इसलिए वह गिरिश के इच्छानुसार सब कुछ करती है। गिरिश एक तरफ पति का कर्तव्य निभाता है तो दूसरी ओर अर्चना से प्रेम करता है। कहानी प्रेम का त्रिकोण बनती है, जिसका मध्य है गिरिश। गिरिश पुराने संस्कारोंवाला है परंतु गिरिजा के रूप में आधुनिकता ने उसका साथ नहीं छोडा है। अर्चना की मनस्थिति का चित्रण सफलता से किया है।

"ढोलक" कहानी में रामदेव को भारतीय शादी की परंपरा तथा शादी की रस्में निभाना पूरानी परम्परा लगती है। वह पाश्चात्य सभ्यता के अनुसार रहना चाहता है, शादी करना चाहता है। परंतु पाश्चात्य महिलाएँ भारतीय विवाह ही रस्में देखाना चाहती है। इसलिए रामदेव भारतीय परंपरा के अनुसार शादी को तैयार हो जाता है। भारतीय विवाह पध्दति का विरोध करनेवाले शिक्षित युवक की मनस्थिति की ओर संकेत करनेवाली कहानी है "ढोलक"।

मनुष्य का सत्य, परमसत्य खोजने के लिए पत्नी और संसार को त्याग देनेवाले अधकचरे संन्यासी की कहानी है "भगोडा"। वह संन्यास तो लेता है परंतु साधना में उसका मन नहीं लगता, घर की याद उसे सताती है। मानवीय संबंधों को वह भूलनहीं सकता, तोड नहीं सकता।

"अमृतसर आ गया" कहानी का संबंध देशविभाजन और साम्प्रदायिक दंगों से है। यह कहानी एक रेल में घटित है। रेल जब तक पाकिस्तानी इलाके से जा रही है तब तक हिंदु लोग मुसलमानों से डरते हैं। मुसलमानों से अपमानित होकर भी चुप रहते हैं। हिंदु औरतोंपर होनेवाले अत्याचार चुपचाप अपनी आँखों से देखते है। परंतु रेल जब भारतीय इलाके में आती है तो मुसलमान चुप हो जाते हैं। मुस्लिमों ने जो अन्याय, अत्याचार किये थे उसीप्रकार हिंदू भी मुसलमानों से पेश आते हैं। हिंदु–मुसलमान दोनों एक दूसरे को भय और आशंका से देखते हैं। यह कहानी अत्यंत प्रभावी एवं सशक्त है।

"संन्यासी" एक संन्यासी की द्वंन्द्वपूर्ण मन:स्थिति का चित्रण करनेवाली कहानी है। इसमें एक पति–पत्नी अपने बच्चे को बचाने के लिए प्रयत्न कर रहे है। उसे जडी–बुटी पिलाते हैं, मंत्र पढते है फिर भी बच्चे की जान नहीं बचती। अंत में संन्यासी मानवीय संबंध पाने के लिए, जीवन जीने के लिए संन्यास त्यागकर संसार में वापस आ जाता है। मनुष्य का सत्य मनुष्य के हृदय में ही मिलता है, बाहर नहीं यह बताने का प्रयास है "संन्यासी" कहानी।

"पटरियाँ" कहानी संग्रह की कहानियाँ पाठकों को अपने में बाँधती है। समाज में विषमताओं से जुझते हुए लोगों का हृदयस्पर्शी चित्रण करनेवाला कहानी संग्रह है "पटरियाँ"।

"भटकती राख :–

"भटकती राख" कहानी संग्रह की कहानियाँ अत्यंत लोकप्रिय हुई है। इन कहानियों की भाषा अतीत धर्मा होकर भी कहानियाँ वर्तमान को नहीं भूलती। इस कहानी संग्रह की कहानियाँ भविष्य के पर्दे पर आज की तस्वीरें बनाती हैं और अतीत के संदर्भ में आज की तात्कालिक ध्वनियाँ मुखर करती हैं। अनेक जिंदा चरित्र और रोज की जिंदगी का यथार्थपूर्ण वर्णन करते हुए "भटकती राख" की प्रत्येक कहानी आगे बढती है और अपने लक्ष्य पर पहुँचती हैं, पाठक को पहुँचाती है। जिन्दगी में होनेवाली विविधता और जिन्दगी का विस्तार इन अनुभवों को चित्रित करनेवाले कहानियों का संग्रह है "भटकती राख"। इन कहानियों के पात्र और परिस्थितियाँ तात्कालिक है। ये कहानियाँ पाठकों पर अपनी गहरी छाप छोडती है। बीवर, लेनिन का साथी, सिफारिशी चिठ्ठी, सिर का सदका, गीता सहस्रनाम के चरित्र और अनुभव हमें आज भी कहीं ना कही मिलते हैं। आधुनिक जीवन की जटिलता एवं अन्तर्विरोध को स्पष्ट करेनवाली ये कहानियाँ हैं। आर्थिक परिस्थिति की कमजोरी के कारण जो दर्द होता है वही दर्द ये कहानियाँ हमारे सामने लाती हैं। इन कहानियों का शिल्प अत्यंत खुरदरा रहा है।

मेरी प्रिय कहानियाँ :–

"मेरी प्रिय कहानियाँ" नामक कहानी संग्रह में भीष्म साहनी ने अपनी कुछ चुनी हुई कहानियों को लिया है। उनमें "वाङ्चू", "लीला नन्दलाल की", "अमृतसर आ गया", "चीफ

की दावत" आदि प्रसिध्द कहानियों को एकत्रित रूप में हमारे सामने प्रस्तुत किया है। हमने इन कहानियों की चर्चा की है।

इस प्रकार भीष्म साहनी का कहानी साहित्य धर्म और पूँजीवाद, आधुनिकता बोध से विसंगति का जाल बुनता है। इन कहानियों का केंद्रबिंदू "व्यक्ति" नहीं बल्कि "मनुष्य" है। विभक्त समाज की विसंगतियाँ, शोषण आदि का सकारण विवेचन इन कहानियों में हुआ है। मध्यवर्ग का विडम्बनापूर्ण और स्वार्थी चित्रण किया गया है।

साम्प्रदायिक दंगे, वर्गघृणा का फैलाव, विदेशी आक्रमण, गंदी राजनीति, पूँजीवाद के कारण बढती विषमता, अमानवीयता, स्वतंत्रता की प्राप्ति, स्वाधीनता आंदोलन आदि को चित्रित करने का काम भीष्म साहनी की कहानियाँ करती है।

आपका प्रगतिशील मानवतावादी दृष्टिकोन आपके कहानियों में रहा है। आपकी कहानियों का सत्य या जीवन यथार्थ इतिहास और समय के सापेक्ष है। आपकी कहानियों की भाषा अत्यंत सुंदर, शांत है। उसमें कोई शोर नहीं है। आपकी कहानियों की भाषा रोज के जीवन की खडीबोली है। उसमें आपने बीच बीच में उर्दू, पंजाबी शब्द तथा मुँहावरों का प्रयोन किया है।

2) <u>उपन्यास</u> :-

भीष्म साहनी प्रेमचन्द की परम्परा के लेखक है। विषम पारिवारिक परिवेश, रोज की जिन्दगी चलाने के लिए नये कामों की खोज, पुराने संस्कार भरा बचपन, देश विभाजन का दु:ख आपने अपनी जिन्दगी में भोगा है। स्वतंत्रता के बाद के संक्रमणकालिन समाज का यथार्थ चित्रण आपने अपने उपन्यासों में किया है। मार्क्सवादी दृष्टिकोण, करूणा, व्यंग्य आदि आपके उपन्यासों के वैशिष्टय रहे है। सामाजिक बदलाव के प्रति आप आज भी लेखन कार्य में सक्रिय है। व्यक्ति और समाज के संबंधों का चित्रण आपने अपने उपन्यास में किया है। भीष्म साहनी के निम्नलिखित उपन्यास प्रकाशित है –

(1) झरोखे ।

(2) बसन्ती ।

(3) कडियाँ ।

(4) तमस ।

(5) मय्यादास की माडी ।

(6) कुंतो ।

इन उपन्यास का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार है –

झरोखे :–

इ. 1967 में प्रकाशित "झरोखे" भीष्म साहनी का पहला उपन्यास है। इस उपन्यास को आपके बचपन की आत्मकथा कहा जा सकता है। क्योंकि आपने अपने बचपन की कथा को कथानक के रूप में चित्रित किया है। "झरोखे" एक छोटे मध्यमवर्गीय आर्यसमाजी हिन्दू परिवार की कहानी है। इस परिवार के दोनों लडकों को ब्रह्मचर्य की शिक्षा दी जाती है। स्त्रियों के प्रति आदरभाव उनके मन में भरा जाता है। परिवार मे उन्हें वैराग्य के गीत सुनाये जाते हैं। उनको प्राचीन नैतिक बंधनों में बाँधकर रखा जाता है। इन बच्चों के पिताजी उनको मंत्र, तंत्र, पूजा, हवन आदि के लिए तैयार करते हैं। हिन्दू–मुस्लिमों के संयुक्त गली में यह परिवार रहता है। जहाँ पर दोनों धर्मों में विद्वेष, घृणा की भावना तथा शत्रुता भी है। अगर मुस्लिम परिवार में बकरी का मांस बनाया जाता है तो, घर का वातावरण शुध्द करने के लिए हिन्दू अपने घर में हवन करता है। मुस्लिमों के बच्चों को म्लेच्छ समझकर हिंदू परिवार में अपने बच्चों को उनसे दूर रखते हैं, परंतु पिताजी व्यापारी होने के कारण मुसलमान व्यापारियों के साथ मिल जुलकर, हँसी मजाक के साथ व्यापार करते हैं। उनके घर जो मुसलमान व्यापारी आते हैं उनके खाने–पिने के बर्तन परिवार में स्वतंत्र जगह पर रखे जाते हैं।

घर में आर्यसमाज का प्रभाव होने के कारण घर के वातावरण से प्रभावित होकर तुलसी भी, मंत्र, श्लोक, पूजा, हवन, संध्या सीखता है, परंतु उसकी सामाजिक स्थिति में कुछ

भी बदलाव नहीं होता। वह अन्त तक घर में नौकर ही रहता है और अपने बेटे को भी नौकर ही बनाता है।

पीढी संघर्ष की ओर भी भीष्म साहनी ने "झरोखे" उपन्यास में संकेत किया है। उपन्यास में बालक भीष्म और बलराज के पिताजी उनपर आदर्शवादी पुरातन संस्कार करना चाहते है। पिताजी आर्यसमाज से प्रभावित एक सफल व्यापारी हैं, परंतु भीष्म और बलराज नयी जिन्दगी जीने के लिए प्रयत्नरत है। घर के वातावरण में उबकर बलराज घर छोडकर नयी जिन्दगी तलाश करने चला जाता है। इसमें मध्यमवर्गीय परिवेश और अन्तर्विरोध का चित्रण है। एक छत्र के नीचे रहते हुए भी सभी की मंजिले, राहे अलग अलग है। कहानी में हँसी-खेल है। दर्द है और जीवन की निर्मम गति का भास भी मिलता है।

इस उपन्यास में लेखक ने स्पष्ट किया है कि पारिवारिक जीवन में नित्य घटित घटनाएँ आम तौरपर सामान्य होती है पर संस्कारों के रूप में उनका महत्व असाधारण होता है। ये छोटी घटनाएँ पात्रों के जीवन में निर्णायक बनकर उनकी जिन्दगी बदल देती है।

बसन्ती :-

दिल्ली महानगर में रोजगार की तलाश में निरंतर इधर उधर घूमनेवाले निम्न वर्ग के लोगों का कथानक बसन्ती उपन्यास का कथानक है। पूँजीवादी और सामन्ती व्यवस्था की शिकार बनी, उपेक्षित शोषित नारी बसन्ती के विद्रोह का चित्रण इस उपन्यास में किया है। बसन्ती परंपरागत व्यवस्था के ढाँचे को तोडने का तथा स्वतंत्र मार्ग खोजने का प्रयत्न करती है। बसन्ती उपेक्षाओं, अभावों, संकटों और संघर्ष का जीवन जीने के बाद भी मानवीय चरित्र को लिए हुए है।

उपन्यास में मध्यमवर्ग की बस्तियाँ अनेक बार उखडती है और फिर से बसती है, इससे पता चलता है कि आजादी सामान्य लोगों को नहीं तो सिर्फ नेताओं, पूँजीपतियों, अधिकारियों को मिली है। बसन्ती, दीनू, बुलाकी तथा अन्य लोग पूँजीवादी व्यवस्था के

खिलाफ लड़ते लड़ते अपनी टूटी हुई बस्तियों को बार बार बसाते है। यहाँ पर हमें उनकी प्रबल इच्छा और साहस का परिचय मिलता है। उपन्यास में निम्न वर्ग पर शहरी जीवन का गहरा प्रभाव पडा है। बस्ती की लडकियाँ फोटो खिंचवाती है, शाम के वक्त टी.वी. देखने के लिए किसी घर की खिडकी से झाँकती है। रेडियो पर फिल्मी गाने सुनती है। दिल्ली में रहकर बस्ती के नई पीढी को दिल्ली की आधुनिकता की हवा लग गयी है। फिल्मों का प्रभाव बसन्तीपर पडा है। क्योंकि वह पहले साठ साल के बूढे के साथ शादी कर चुकी है परंतु फिर भी वह दीनू से फिल्मी टाईप विवाह करती है। यहाँ पर बसन्ती में सामन्ती व्यवस्था और सामाजिक मूल्यों के प्रति विद्रोह की भावना है।

उपन्यास में बस्तीवालों के साथ साथ श्यामा बीवी, श्रीमती सूरी आदि लोगों के मध्यमवर्गीय परिवारों का चित्रण भी हुआ है। श्यामा बीवी की बसन्ती के प्रति सहृदयता एक धार्मिक पाखण्ड हैं। उसमें स्वार्थ छिपा है। श्यामा बीवी बसन्ती को चोर भी कहती है। सूरी साहब गर्भवती बसन्ती को अपने घर में सहारा नहीं देते, परंतु उसके पिताजी के सामने ढोंगी मानवता से पेश आते है। अफसर का चरित्र ऐसा है, जो निम्न लोगों से मीठी बाते भी नहीं बोलता। बस्तीयाँ टूटनेपर उसे आनन्द मिलता है। बसन्ती जिस बस्ती में रहती है वह जब टूट रही है तो मध्यम वर्गीय लोग तथा दूकानदार आनंदित है।

बसन्ती में निम्नमध्यमवर्गीय लोगों का समाज व्यवस्था में विश्वास उठ रहा है। पुनर्वास की समस्या को भी यहाँ चित्रित किया गया है। निम्न वर्ग के लोग रोजगार के लिए अपने हाथों से स्वयं की झोपडियाँ तोडने को मजबूर हो जाते हैं। बुलाकीराम का विवाह लोगों के लिए मज़ाक है, क्योंकि अपना वंश आगे चलाने के लिए वह गर्भवती बसन्ती से शादी करता है।

दिल्ली की बस्तियों का जनजीवन, हलचल, संघर्ष, विद्रोह का यथार्थ चित्रण भीष्मजी ने बसन्ती उपन्यास में किया है। यहाँ पर लेखक का मार्क्सवादी दृष्टिकोण हमारे सामने आता है। आधुनिक कथानक और शिल्प के कारण "बसन्ती" उपन्यास साहित्य क्षेत्र में अपना अलग स्थान बनाये है।

कडियाँ :-

भीष्म साहनी का दूसरा उपन्यास "कडियाँ" (1970) पति-पत्नी बने महेंद्र और प्रमिला के वैवाहित टूटते संबंधों का चित्रण प्रस्तुत उपन्यास में किया गया है। महेंद्र की पत्नी प्रमिला पुराने संस्कारोंवाली है तो महेंद्र पर आधुनिक विचारों का प्रभाव है। प्रमिला अपने पिता नारंग साहब के आदर्शों के अनुसार चलनेवाली है। प्रमिला हमेशा अपने पति महेंद्र की तुलना पिता नारंग से करती है। महेंद्र को यह अच्छा नहीं लगता। महेन्द्र चाहता है कि वह उसके विचारों को समझे, समाज में आधुनिकता के साथ हंस-खेलकर बातें करे। परंतु इधर प्रमिला है कि जिसके लिए अपना घरसंसार और पति की सबकुछ है। विचार न मिलने के कारण दोनों में संबंध बिगड जाते हैं। वह प्रमिला को घर से निकाल देता है और अपने ऑफिस में ही काम करनेवाली कैशियर सुषमा से प्रेम करने लगता है। महेंन्द्र पति-पत्नी के संबंधों को बकवास कहता है। कुछ दिनों बाद सुषमा भी महेंद्र से अलग हो जाती है। फिर महेंद्र मिसेज भगत में प्रेम पाने की कोशिश करता है परंतु मिसेज भगत महेंद्र से हमेशा दूर ही रहती है। अपने विचारों के कारण महेंद्र न सुषमा को पाता है और न अपनी पत्नी प्रमिला को अपनाता है। महेंद्र प्रेम की हीन भावना का शिकार होकर परिवार के नैतिक बन्धन तोड देता है। माँ बाप के असफल वैवाहिक जीवन का परिणाम महेन्द्र के बेटे पप्पू पर होता है। महेन्द्र की हीन प्रेम भावना का वह भी शिकार होता है। उपन्यास के अंत में प्रमिला आर्थिक दृष्टि से अपने आप को आत्मनिर्भर बनाती है और महेन्द्र से अलग हो जाती है।

इस उपन्यासद्वारा मध्यम वर्गीय परिवार के टूटते संबंधों का तथा आज की स्थिति का चित्रण सफलता से किया है। लेखक का मत है कि पति-पत्नी के वैवाहिक रिश्ते जब सिर्फ जीवन का भान बन जाए तो उन रिश्तों का टूटना आवश्यक तथा अनिवार्य है। वैवाहिक जीवन के टूटते संबंधों का समाधान लेखक ने अंत में तलाक में ढूँढा है। लेखक ने टूटते संबंधों को आधुनिकता के संदर्भ में स्पष्ट किया है।

तमस :-

"तमस" भीष्म साहनी का साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत उपन्यास हैं (1975)। हिंदु-मुस्लिम भीषण साम्प्रदायिक दंगों की निर्मम करूण गाथा को प्रस्तुत करनेवाला उपन्यास है "तमस"। अंग्रेजों ने समझ लिया था कि हिन्दु और मुसलमानों को आपस में लड़ाकर वे इस देश पर राज्य कर सकते है। इसीकारण उन्होंनें अपनी कुटील राजनीति का प्रयोग करके देश में साम्प्रदायिक दंगे शुरू किये। उन्हीं दंगों का चित्रण तमस उपन्यास में किया है। हिन्दू महासभा, मुस्लिम लीग, सिक्ख समाज जैसी धार्मिक, साम्प्रदायिक ताकतों को भीष्म साहनी ने अपने उपन्यास में बेनकाब किया है। डिस्ट्रिक्ट कमिशनर रिचर्ड के द्वारा साहनी जी ने अंग्रेजों की "डिवाईड ॲण्ड रूल" (फूट डालो और राज्य करो) नीति को सजगता से चित्रित किया है। 1947 के मार्च-अप्रैल में हुए साम्प्रदायिक दंगों के पाँच दिनों का करूणामय चित्रण भीष्म साहनी ने तमस में किया है।

अंग्रेज अपनी कुटिल राजनीति से एक चमार द्वारा सुअर मारकर मस्जिद के सामने फेंक देते है। परिणाम स्वरूप मुस्लिम एक गाय को मारते है। शहर में साम्प्रदायिक दंगे शुरू होते हैं। लूट, बलात्कार, हत्या, आग का तांडव शहर में फैलता है। शहर की यह आग गाँवों में भी फैलती है। गाँवों में भी घर जलाए जाते हैं, नारियोंपर बलात्कार होते हैं, अनेक नारियाँ अपने आप को अत्याचार से बचाने के लिए अपने बच्चों के साथ कुएँ में कूदकर अपनी जान देती है। कम्युनिस्ट पार्टी के लोग इन दंगों को रोकने का प्रयत्न करते है परंतु सफल नहीं होते। गाँव के सभी पार्टियों के कार्यकर्ता मिलकर रिचर्ड के पास जाते हैं परंतु रिचर्ड भी दंगे रोकने में अपने आप को असमर्थ बताता है। अंत में अमन कमेटी की स्थापना होती है। उसमें सात मुस्लिम, पाँच हिन्दू तथा तीन सिक्ख कार्यकर्ता है। अमन कमेटीद्वारा शांतता स्थापित करने के लिए गाँव में हिंदू-मुस्लिम एकताके नारे लगाये जाते है।

"तमस" में भीष्म साहनी का मार्क्सवादी दृष्टिकोण हमारे सामने आता है। शहनवाज अपने व्यापारी दोस्त लक्ष्मीनारायण की जान बचाता है, तो वही शहानवाज नौकर मिल्खी की हत्या भी करता है। भीष्म साहनी ने इस बात की ओर भी संकेत दिया है कि साम्प्रदायिक दंगों में हमेशा निम्नवर्ग के लोग ही शिकार होते हैं परंतु उच्च वर्ग के लोगों को कोई हानि नहीं पहुँचती। राजो अपनी जान मुसीबत में डालकर हरनामसिंह और बन्तो की रक्षा करती है। यहाँ पर मानवीयता भी उभरकर सामने आती है। अनेक कहानियों का संकलन कर "तमस" कथा विकसित की गयी है। उसमें नत्थू और उसकी पत्नी का प्रसंग, रिचर्ड और लीजा के प्रसंग, कँाग्रेस कमेटी के सदस्यों का प्रसंग, वानप्रस्थीजी, प्रधानजी, देवव्रत और रणवीर का प्रसंग, रघुनाथ–शाहनवाज का प्रसंग, देवदत्त और उनके साथियों का प्रसंग, हरनामसिंह और बन्तों का प्रसंग, इन्हें शरण देनेवाली राजो का प्रसंग, इकबालसिंह के विपन्न विषण्ण जीवन का प्रसंग, प्रकाशो और अल्लाहरखा का प्रसंग आदि अनेक प्रसंगों के माध्यम से 'तमस' का कथानक विकसित हुआ है। इन प्रसंगों से कथानक थोडा असंगठित हुआ है, परंतु कथानक का क्रम बनाने में लेखक भीष्म साहनी सफल हुए है।

तमस की जिन्दगी छोटी मोटी लडाइयों की कहानी नहीं बल्कि देशविभाजन जैसी ऐतिहासिक, संघर्षपूर्ण घटना का दस्तावेज है, जिसमें अनेक लोग एक साथ अपने ठिकानों से उखड़ गये, उजड़ गये।

मय्यादास की माडी :–

एक ही हवेली में बसनेवाले चार पीढि के सामन्तों की कथा है "मय्यादास की माडी" उपन्यास (1988) । भीष्म साहनी का यह नया उपन्यास है। उन्नीसवीं शताब्दी में भारत की सामाजिक, राजनीतिक परिस्थिति का चित्रण सामन्तों की चार पीढियों के जीवन के माध्यम से किया है। दीवान धनपतराय का चित्रण प्रमुखता से इस उपन्यास में किया गया है। दीवान धनपतराय के षड्यंत्र का पता हमें उपन्यास के प्रारंभ में ही चलता है। धनपतराय के बेटे मझले और पगले के विवाहका चित्रण उपन्यास के प्रारंभ में हुआ है। इसमें धनपतराय का षड्यंत्र

छिपा हुआ है। दीवान मय्यादास के माडी की निलामी का बदला लेने तथा ठेकेदार मंसाराम को मुहल्ले में अपमानित करने के लिए धनपतराय अपने दोनों बेटों का विवाह हरनारायण और मंसाराम की बेटियों से करता है।

दीवान गोकुलदास की रखेल और चंद्रा का बेटा है दीवान धनपतराय। धनपतराय का चरित्र अत्यंत मजेदार है। मय्यादास धनपतराय को गोकुलदास का वारिस मानने को तैयार नहीं है। धनपतराय जब मय्यादास की माडी में आता है तो मैय्यादास उसका सारा सामान बाहर फेंक देता है। दीवान धनपतराय ऊँटो की पूँछों का व्यापार शुरू करते है। अंग्रेजी सैनिकों को ऊँट तथा ऊँट की पूँछे पहुँचाने के कारण धनपतराय को मुहल्ले में "दूमकटा दीवान", "सनकी दीवान" आदि उपाधियों से जाना जाता है। दीवान धनपतराय को तीन गाँवों के किसानों से लगान वसूल करने का अधिकार अंग्रेजों ने दिया है। तीनों गाँवों का लगान मिलने पर धनपतराय मय्यादास को नीचा दिखाने की कोशिश हमेशा करता है।

शोषक और साम्राज्यवादी अंग्रेजों का वर्णन भी मय्यादास की माडी उपन्यास में हुआ है। अंग्रेजों ने भारत में रेलगाडी इसलिए शुरू की कि भारत का कच्चा माल अंग्रेजों को आसानी से प्राप्त हो सके। गजमण्डी में जब रेलगाडी शुरू होती है, तो गाँववालों द्वारा अनेक अंधश्रध्दात्मक प्रतिक्रियाएँ व्यक्त होती है।

दीवान धनपतराय सख्ति से लगान वसूली का काम करता है। अंग्रेजों से होनेवाले अच्छे संबंधों का उपयोग धनपतराय अपने स्वार्थपूर्ति के लिए करता है। दीवान धनपतराय के सौतेले भाई, स्वतंत्रता सेनानी लेखराज को धनपतराय के कहने पर ही अंग्रेजों ने कैद में रखा है। दीवान धनपतराय का बेटा हुकूमतराय बॅरिस्टर है। इसकी अंग्रेजों के साथ अच्छी साँठ गाँठ है। इसी हुकुमतराय के कहने पर अंग्रेज पुलिस अधिकारी हेन्री स्वतंत्रता आंदोलन दबाने की कोशिश करता है।

उपन्यास में इसाई मिशनरियाँ और आर्यसमाज शिक्षा प्रसार करने का कार्य कर रहे है। गाँव के सामान्य लोग अकाल, भूखमरी, बिमारियाँ आदि संकटों से लड रहे हैं। भीष्म साहनी ने इस उपन्यास में विधवा समस्या को भी अंकित किया है।

इसप्रकार "मय्यादास की माडी" उपन्यास में उन्नीसवीं शताब्दी की सामाजिक, राजनीतिक परिवेश को उपन्यास का कथानक विषय बनाया है। कथा पूर्वदीप्ति शैली में है। शीर्षक के साथ साथ उपन्यास का कथानक और शिल्प भी नया है।

"कुंतो" भीष्म साहनी का नया उपन्यास प्रकाशित हुआ है।

भीष्म साहनी के उपन्यासों में सामाजिक संघर्ष का अधिक चित्रण हुआ है। विशिष्ठ परिवेश में व्यक्ति का स्वभाव कैसे बनता बिगड़ता है इसका भी चित्र आपके उपन्यासों द्वारा स्पष्ट होता है। सामाजिकता को प्रधानता देनेवाली विधा के रूप में ही भीष्म साहनी ने उपन्यास विधा को अपनाया है और अपने सभी उपन्यासों का निर्माण भी सामाजिकता की दृष्टि को सामने रखकर ही किया है।

3) <u>नाटक</u> :–

भीष्म साहनी के व्यक्तित्व पर बचपन से नाटक का अधिक प्रभाव रहा है। आपने अनेक नाटकों में भी काम किया है। आपने उपन्यास, कहानियों की तरह ही सामाजिक और ऐतिहासिक नाटक लिखे है। आपने चार नाट्यकृतियों का निर्माण किया है।

(1) हानुश ।

(2) माधवी ।

(3) मुआवजे ।

(4) कबीरा खडा बजार में ।

इस नाट्यकृतियों का अल्प परिचय निम्न प्रकार से है –

हानुश :-

इ. 1960 के आसपास लेखक भीष्म साहनी चेकोस्लोवालिया की राजधानी प्राग गये थे। वहाँ पर उनके मित्र निर्मल वर्मा रहते थे। भीष्मजी अपने मित्र से मिलना चाहते थे, वहाँ घूमना चाहते थे। प्राग शहर में एक मिनार पर ऐतिहासिक घडी है, जिसके बारे में अनेक दंतकथाएँ प्राग में प्रचलित है। ऐसा समझा जाता था कि वह घडी बनाने के बाद बादशहाने उस कलाकार की आँखे निकाल दी थी। क्योंकी उस प्रकार की दूसरी घडी वह न बना सके। इस कथा को भीष्म साहनी ने नाटक के रूप में "हानुश" में अपनाया है।

राजधानी "प्राग" शहर में लालामिस्त्री हानुश अपनी पत्नी और बच्ची के साथ रहता था। हानुश का भाई एक पादरी था। हानुश चाहता था कि उसका नाम सारी दुनिया में हो। कहीं दूसरी जगह पर बनी घडी के बारे में उसने बहुत कुछ सूना था। हानुश भी एक घडी बनाने की सोचने लगा। शहर के एक गणित शिक्षक से हानुश हिसाब-किताब की बातें सिखता है। शहर के एक लुहार से घडी के आवश्यक पूर्जों को बनाता है। अपने पादरी भाई की सहायता से उसे चर्च भी उपलब्ध होता है। हानुश घडी बनाने के काम में लग गया। परिवार की हालत बिगडती जाती है। इस परिस्थिति में भी हानुश जेकब नामक एक निराश्रित को सहारा देकर उसे ताले बनाना सिखाता है। जेकब ताले बनाता है और हानुश की पत्नी वह ताले बाजार में जाकर बेचती है। इस तरह परिवार का खर्चा चलता रहता है। घडी बनाते समय हानुश जेकब को भी घडी बनाना सिखाता है और उससे सहायता लेता है। इसीतरह सत्रह साल बीत जाते है। इन सत्रह सालों में हानुश अनेक बार घडी बनाने का निश्चय मन से निकाल देता है। घडी का सामान खरीदने के लिए उसके पास पैसे नहीं बचते तो वह निराश हो जाता है। परंतु हर बार किसी अदृश्य शक्ति के कारण वह फिर से घडी बनाना शुरू करता था। शहर के कुछ व्यापारी हानुश को एक शर्त पर पैसे देने के लिए तैयार होते है कि घडी बनने के बाद वह उन व्यापारियों के अनुसार उस घडी को स्थापित करे। घर की बिगडती आर्थिक स्थिति, अनेक मानसिक घात-प्रतिघात हानुश सहता है परंतु अंत में घडी बना ही लेता है। अनेक

परिश्रम करने के बाद हानुश अपने कार्य में सफल होता है। हानुश शहर के व्यापारी, जेकब, पादरी भाई, और परिवार के प्रति आभार व्यक्त करता है, क्योंकि इन सभी ने अपनी ओर से घडी बनाने में हानुश की सहायता की थी।

हानुशद्वारा बनाई घडी शहर में एक भीड भरे चौराहे पर लगायी जाती है। अनेक लोग उस घडी को देखने देश–विदेश से आते हैं। प्राग का बादशाह हानुश का सम्मान करना चाहता है और उसे पुरस्कार भी देना चाहता है। सम्मान स्वरूप बादशाह हानुश को अपने दरबार में दरबारी का पद देता है। इतना यश, सम्मान पाकर हानुश खुश हो जाता है। परंतु इधर हानुश के प्रति कुछ और ही कुटिल कारस्थान रचा जा रहा था। राजा समझता है कि चर्च से सहायता मिलने पर भी हानुश की घडी चर्च में, या फिर राजा के दरबार में क्यों नहीं लगायी? बादशाह यह भी सोचता है कि हानुशने अगर दुसरी घडी बनायी तो उसके शहर की प्रसिध्दि कम हो जाएगी। चाहे कोई भी कारण हो बादशाह के आदेश अनुसार हानुश की आँखें निकाली जाती है। सर्वोच्च पुरस्कार के साथ साथ ही आँखें निकालने का आदेश बादशाह देता है।

इसप्रकार बादशाह द्वारा एक कलाकार का उपर्युक्त तरीके से सम्मान करना सामाजिक विडम्बना है। हानुश विक्षिप्त होता है। इसी विक्षिप्तता के कारण ही हानुश कभी अपनी नियति अथवा घडी को मिली सजा देखकर जेकब घडी बनाने का रहस्य अपने दिल में छिपाकर शहर से भाग जाता है। कुछ दिनों बाद घडी खराब हो जाती है। उसे ठीक करने के लिए हानुश वहाँ पर पहुँचता है। कोई कलाकार ऐसी सजा मिलनेपर अपनी रचना को नष्ट कर देगा, परंतु हानुश उनमें से नहीं था। उसी घडी की हालत जानकर हानुश का हृदय ममता से भर जाता है। हानुश घडी तोडने के बजाय उसे ठीक करने का काम शुरू करता है। यह प्रसंग सामन्तशाही के खिलाफ एक कलाकार के संघर्ष का महान प्रतिदान है। इस नाटक में हानुश के सत्रह साल के संघर्ष का चित्रण साहनी जी ने किया है।

"हानुश" नाटक में एक ही बात यथार्थ है – प्राग की घडी और बादशाह द्वारा कलाकार को विचित्र पुरस्कार। बाकि संपूर्ण नाटक भीष्म साहनी का कल्पना संसार है।

अत्याचारी शासन व्यवस्था का शिकार बने "हानुश" की संघर्षपूर्ण जिंदगी का चित्रण "हानुश" नाटक में किया है। अंत में हानुश का बडप्पन तथा महानता का दर्शन होता है। भीष्म साहनी ने यह नाटक विदेशी कथा को आधार बनाकर लिखा है परंतु इस नाटक में चित्रित कलाकार का संघर्ष तो सर्वपरिचित तथा सार्वकालिक है।

माधवी :–

महाभारत की कथा पर आधारित भीष्म साहनी ने "माधवी" नाटक लिखा है। ऋषि विश्वामित्र का शिष्य गालव अपनी शिक्षा समाप्त होने के बाद विश्वामित्र को गुरूदक्षिणा देने की जिद करता है। विश्वामित्र ना कहते हुए भी वह जिद पर अडा रहता है। विश्वामित्र गालव के जिद्‌दी स्वभाव से क्रोधित होते है और गुरूदक्षिणा के रूप में आठ सौ अश्वमेघी घोडे माँगते है। शिष्य गालव विश्वामित्र की माँग को पूरा करने के लिए अश्वमेघी घोडे ढूँढने के लिए निकलता है। घोडों की खोज में भटकते भटकते गालव अन्त में दानवीर राजा ययाति के आश्रम पहुँचता है। ययाति राजपाट से निवृत्त हुआ है। गालव की गुरूदक्षिणा के बारे में जानकर ययाति असंमजस में पड जाता है। परंतु ययाति गालव को निराश नहीं करता। जाते जाते वह अपनी दैवीगुण संपन्न एकमात्र पुत्री "माधवी" को गालव के हवाले करता है और कहता है कि जहाँ किसी राजा के पास आठ सौ अश्वमेघी घोडे मिलेंगे, उनके बदले में माधवी को वहाँ पर छोड देना। माधवी के बारे में कहा गया है कि उसके गर्भ से उत्पन्न बालक चक्रवर्ती राजा बनेगा। यहाँ से आगे "माधवी" नाटक की कथा का प्रारंभ होता है। उपन्यास के केन्द्र में ययाति कन्या माधवी है जो एक अलौकिक मिथकीय परिवेश में रहते हुए भी अधिक सजीव, प्रासंगिक, आकर्षक बनकर उभरती है। एक अनूठे, मर्मस्पर्शी घटनाचक्र से गुजरते हुए, प्रधानपात्र माधवी, गालव, विश्वामित्र, ययाति और अनेक राजा लोग अपनी अपनी भूमिका निभाते हैं और नये नये आयाम ग्रहण करते है।

13766

मुआवजे :-

विडम्बनापूर्ण सामाजिक स्थिति पर लिखा व्यंग्यात्मक प्रहसन नाटक है "मुआवजे"। इस नाटक के शहर में कुछ ऐसी घटनाएँ हुअी है जिसके कारण साम्प्रदायिक दंगे होने की आशंका तथा डर है। अगर तणावपूर्ण स्थिति मर्नाण हो जाए हमारे देश के नागरिक, प्रशासन उस स्थिति का सामना किसप्रकार करते है, इस विषय को लेकर "मुआवजे" नाटक का निर्माण किया गया है।

शहर में किसी व्यक्तिपर पत्थर फेंके गये है, परंतु शहर के लोग यह नहीं जानते कि वह आदमी हिंदू है या मुसलमान। लोग उस व्यक्ति के कपडों को देखकर अंदाजा लगा रहे है कि वह किस जात या धर्म का व्यक्ति है। इसी समय शहर में एक घोडा मारा गया है, परंतु शहर के लोग उस घोडे को भी धार्मिक दृष्टि से देख रहे हैं ओर उसपर भी हिन्दु-मुसलमान धर्म चिपका रहे है। इन्हीं दो घटनाओं के कारण डर है कि क्या शहर में साम्प्रदायिक दंगे शुरू होंगे ?

पुलिस कमिशनर जानता है कि शहर में दंगे हो सकते है। परंतु वह दंगों को रोकने की कोशिश करने के अलावा दंगे होने के बाद क्या क्या करे इस बात पर सोच रहा है। साम्प्रदायिक दंगों के पश्चात जो सुविधाएँ आवश्यक हैं उन सुविधाओं को कमिशनर दंगों के पहले ही बनाए रखता है। जख्मियों का इलाज, लाशें उठाने का काम, बेसहारा लोगों को सहारा देने का काम, तथा मिनिस्टर द्वारा पाँच लाख रूपये मुआवजे के रूप में लेने की तैयारी भी कमिशनर ने कर दी है। कमिशनर सोमवार से स्कूल भी बंद करवा रहा है, क्योंकि वह समझता है कि सोमवार तक दंगे हो जाएँगे। कमिशनर लोगों से यह भी कहता है कि दंगों को रोकना जनता का काम है, पुलिस का काम दंगे शुरू होने बाद है। कमिशनर दंगा करनेवाले गुण्डों को पकड सकता हैं, परंतु वह यह भी जानता है कि अगर एक गुण्डे को पकडा जाए तो उसकी जमानत देने दस अमीर लोग आते हैं, और न जाने कल वही गुण्डा नेता बन जाए। इसीकारण वह किसी को भी पकडता नहीं। पुलिस को अनेक संकटों का सामना दंगों के शुरू

होने पर करना पड़ता है, इसलिए पुलिस दंगे रोकने की दृष्टि से कोई विचार नहीं करती। दूसरी ओर मंत्रीजी ने अपने तीन बयान पहले ही तैयार रखे है। पहला दंगे शुरू होने से पहले शांति बनाये रखने के लिए। दूसरा बयान दंगे शुरू होनेपर जिसमें मुआवजें का खास जिक्र है। तीसरा बयान दंगे समाप्त होने पर देश के जनतंत्रात्मक मूल्या एवं मान्यताओं, आदर्शों के बारे में है।

सक्सेना एक ऐसा अधिकारी है, जो अपने पार्टियों के नेता के भाषण तो लिखता ही है, विपक्ष के भाषण भी लिखता है। यहाँ पर सक्सेना प्रशासन के उच्च परंतु भ्रष्टाचारी अधिकारी का प्रतिनिधि है। गुमास्ता एक ऐसा कमिशन एजन्ट है, जो दंगा–पीडित लोगों को गुण्डों की की धमकी देकर उनके मकान सस्ते दामों में खरीदता है। उसे लोगों के मरने या बिछडने का कोई सुख–दु:ख नहीं है।

बटन फैक्टरी का मालिक सेठ दौलतराम नागरिकों के प्रतिनिधिमण्डल का नेतृत्व करता है। वह दंगों को रोकने के लिए सरकार को उपाय करने का आग्रह करता है वही दूसरी ओर वह अपने जाति विशेष की सुरक्षा के लिए गैरकानुनी हथियार भी जमा करता है। नाटक में जग्गा जैसे गुण्डे भी है, जो बडे लोगों से पैसे लेकर खुन, कत्ल करते है। दंगापिडित लोगों के घर सस्ते दाम में व्यापारियों को दिलवाते है।

"सुथरा" पात्र अत्यंत दिलचस्प है। वह शहर में घूमता रहता है और लोगों की बातें सुनता रहता है। उसे पता चलता है कि शहर में दंगे होनेवाले है, इसीकारण वह शहर के दूकानवालों को सलाह देता रहता है। सुथरा की दृष्टि में दुनिया भ्रष्ट एवं मतलबी हैं।

इसप्रकार "मुआवजें" नाटक में जीवन प्रत्येक स्तर के पात्र हमारे सामने आते है। इसमें व्यापारी, अधिकारी, राजनेता, तथा आम जनता की मानसिकता स्पष्ट होती है। "मुआवजें" नाटक हमारी विडम्बनापूर्ण सामाजिक स्थिति पर लेखक द्वारा किया हुआ करारा व्यंग्य है। नाटक में पात्रों की संख्या भी अधिक है।

कबीरा खडा बाजार में :-

मध्ययुग के सामाजिक तथा ऐतिहासिक परिस्थितियों को प्रस्तुत करनेवाला नाटक है "कबीरा खडा बाजार में'।

"कबीरा खडा बाजार में' नाटक में निरंकुश और तानाशाही सत्ता के प्रतीक रूप में सिकंदर लोदी का पात्र चित्रित किया गया है। आज की अफसरशाही का प्रतीक है काशी शहर का कोतवाल। मठ का महन्त धर्मान्धता, भावोन्माद, विचारान्धता का प्रतीक है। लेखक भीष्म साहनी ने मौलवी, पंडे, और पुजारियों का धार्मिक दुष्टचक्र भी दिखाया है। प्रस्थापित अन्यायपूर्ण सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था के विरूध्द भक्त और समाजसुधारक कबीर ने जीवन के अन्ततक जो संघर्ष किया, उसी संघर्ष को साहनी जी ने प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु बनाया है। प्रस्तुत नाटक की कथावस्तु को तीन अंकों में नौ दृश्यों के द्वारा प्रस्तुत किया गया है।

कबीर ब्राह्मणी का हरामी बेटा है। नूरा और नीमा ने कबीर का पालनपोषण किया है। कबीर धर्म या जाति के विरूध्द है। वह अपने आप को न हिन्दू मानते है न मुसलमान। कबीर सूत बेचने जब बाजार जाते है तो हिन्दू-मुस्लिम धर्मों के अनेक आडम्बर और मिथ्याचार देखते हैं। दोनों धर्मों के आडम्बर, मिथ्याचार और कुरीतियों पर अपने दोहों के माध्यम से करारा आघात करता है।

नाटक के पूरे कथानक में कबीर सिकंदर लोदी की तानाशाही सत्ता तथा हिंदू-मुस्लिमों के आडम्बर तथा धार्मिक कार्यों का विरोध करता है। सिकंदर लोदी के सामने कबीर हिन्दू-मुस्लिमों के आडम्बरों की धज्जियाँ उडाता है। यह सब देख सुनकर सिकंदर लोदी अपने सैनिकों से कहकर कबीर को शहर से बाहर निकालता है, परंतु लोदी की दहशत कुछ दिनों तक ही रहती है। बाद में सभी दिशाओं से कबीर की चेतना शहर के लोगों से प्रकट होती है। अनेक लोग कबीर के पद गाकर तानाशाही सत्ता का विरोध एक साथ मिलकर करते हैं।

4) जीवनी :-

मेरे भाई बलराज :

यथार्थवादी लेखक के रुप में लेखक भीष्म साहनी सफल रहे है। उन्होंने प्रत्येक साहित्य प्रकार में यथार्थवाद का सफलता से प्रयोग किया है। प्रस्तुत जीवन "मेरे भाई बलराज" लिखते समय भी भीष्मजी ने यथार्थवाद का प्रयोग किया है।

"मेरे भाई बलराज" जीवनी में भीष्म साहनीजी ने बडे भाई बलराज की जिन्दगी की घटनाएँ, प्रसंग, उनके विचार, उनके द्वंद्वों को वर्णित एवं मूल्यांकित किया है। बलराज साहनी भीष्म साहनीजी के बडे भाई है। भीष्मजी का जीवन बचपन से लेकर युवावस्था तक बलराज साहनी के साथ बीता है। भीष्मजी ने बलराजजी के संपूर्ण जीवन को अपना आदर्श माना है। यह एक लेखक के भीतर छिपी सृजक की ईमानदारी है।

बलराज साहनी बचपन से ही विद्रोही स्वभाव के रहे हैं इसीकारण भीष्मजी को जिन्दगी में कभी विद्रोह नहीं करना पडा, क्योंकि बलराजजी के कारण भीष्म साहनी के जिन्दगी के रास्तों को साफ किया। बचपन में भी बलराज भीष्मजी के लिए आदर्श व्यक्ति रहे हैं। बलराज का घर छोडकर जाना, पिता की इच्छा के खिलाफ शादी करना, परम्परागत व्यापार न करना आदि कुछ बातें भीष्मजी को अच्छी नहीं लगती, परंतु फिर भी भीष्मजी ने बलराज के अंदर छिपे विद्रोही व्यक्तित्व को, एक कलाकार की तड़पन को सफलतासे स्पष्ट किया है। भीष्मजी की नजरों में बलराज कभी नहीं हारे, कभी घुटने नहीं टिकाये, जिन्दगी और संकटों में कोई समझौता नहीं किया। चाहे इसीकारण जेलयात्रा भी क्यों न करनी पडे? बलराजने 135 फिल्मों में अभिनय किया और अपने अभिनयद्वारा अपनी जिन्दगी को एक अलग आयाम प्रदान किया है। फिल्मी दुनिया जैसे मायावी दुनिया में रहते हुए भी बलराजजी ने जनसाधारण का दु:ख और जिन्दगी से कभी रिश्ता नहीं तोडा। कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यकर्ता के रूप में होटल के बैरों और मछुआरों की बहुत सेवा की इसीकारण बलराज सामान्य लोगों में अत्यंत लोकप्रिय रहे हैं।

फिल्मों में अभिनय के द्वारा उन्होंने अपने कथन की सच्चाई को लोगों के सामने सिध्द करने की कोशिश की है। अपनी सारी फिल्मों में बलराज ने प्रामाणिक, संवेदनशील भूमिकाएँ अधिक की है। यह सब उनके कलात्मक, सामाजिक, संवेदनशील स्वभाव के कारण ही संभव हुआ है। जीवन और प्रकृति से बलराज ने अपना नाता हमेशा बनाए रखा है।

आधुनिक युग में फिल्मी कलाकार सामान्य जनता से लगभग रिश्ता तोड चुके हैं या यह रिश्ता ही टूट गया है, परंतु बलराज की जिन्दगी हमेशा सामान्य लोगों को, एक प्रेरणा देती रही है समस्त मानवता को सुखी बनाने की प्रेरणा।

भीष्मजी ने अपनी जीवनी "मेरे भाई बलराज" में बड़े भाई बलराज के बचपन से लेकर मौत तक की जिन्दगी को हमारे सामने प्रस्तुत किया है। बलराज के अनेक गुणों को, उनके व्यक्तित्व के सारे आयामों को पाठकों के सामने खोल दिया है। उनके गुणों के साथ-साथ दोषों को भी बताया है। लेखक के रूप में भीष्मजी अत्यंत तटस्थ रहे हैं। एक कलाकार की आदर्श जीवनी किस प्रकार प्रस्तुत करनी चाहिए इसका सर्वोत्कृष्ट उदाहरण भीष्मजी ने हमारे सामने प्रस्तुत किया हैं।

उपर्युक्त विवेचनद्वारा हमें पता चलता है कि एक कहानीकार, उपन्यासकार, नाटककार के रुप में भीष्म साहनी सफल रहे हैं। अपनी जिन्दगी में आये अनेक अनुभवों को आपने अपने साहित्य में प्रस्तुत किया है। कहानी, उपन्यास, नाटक के साथ साथ भीष्म साहनी ने छोटे पाठकों को दूर्लक्षित नहीं किया। "गुलेल का खेल" नामक किताब आपने बच्चों के लिए लिखी है। जो छोटे पाठकों में काफी लोकप्रिय रही है।

बालसाहित्य के साथ साथ आपने अनुवाद कार्य भी किया है। कालेज के दिनों में आपने दो तीन बढिया नाटकों का अनुवाद किया और इन्हीं नाटकों को रंगमंचपर प्रस्तुत किया। भीष्म साहनी कुछ दिनों के लिए मास्को चले गए थे। मास्को में "विदेशी प्रकाशन गृह" में अनुवादक के रुप में काम किया। वहाँ पर उन्होंने रूसी भाषा का काफी अच्छा अभ्यास किया।

साथ ही टालस्टाय का पुनरुत्थान तथा लम्बी कहानियाँ, निकोलाई आस्त्रावस्की का "जयजीवन" आइमातोव का "पहला अध्यापक" आदि सफल अनुवाद किये। मास्को से लौटने के बाद ढाई साल तक "नई कहानियाँ" नामक कहानी पत्रिका का संपादन किया। इसप्रकार भीष्म साहनी का साहित्य विभिन्न प्रकारों में विभाजित रहा है।

अनेक लेखक, व्यक्ति, परिवार, जीवनानुभव, मार्क्सवाद आदि से प्रेरणा लेकर भीष्म साहनी ने अपने साहित्य का निर्माण किया है। इनके साहित्यपर अन्य साहित्यकार, जीवन की अनुभूतियाँ, जीवन का अवलोकन, दूसरे लेखकों की कृतियाँ आदि का प्रभाव रहा है और इसी प्रभाव के साथ इन्होंने अपने नाटक, कहानी, उपन्यासों की रचना की है।